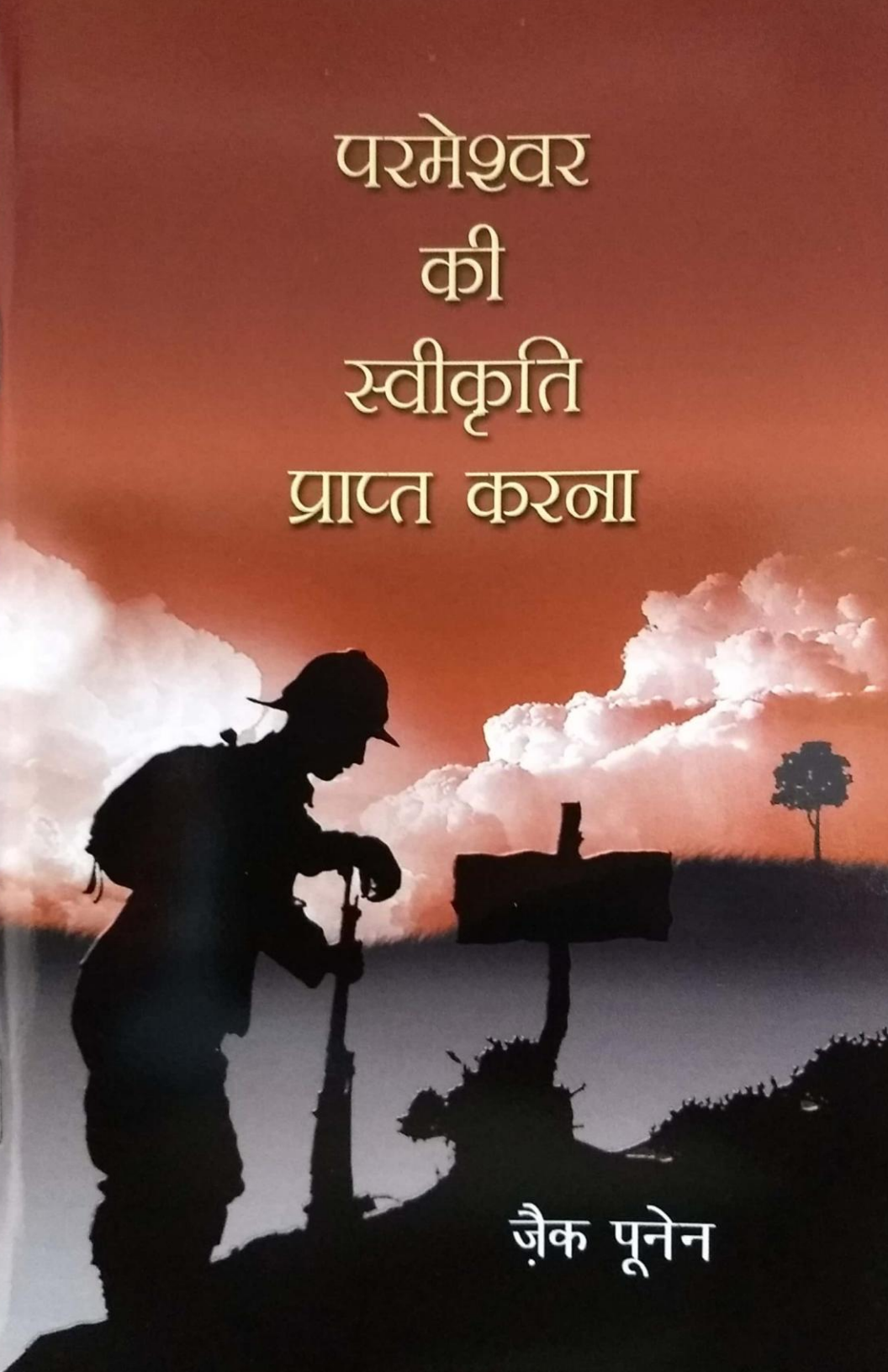
परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करना



ज़ैक पूनेन

परमेश्वर की स्वीकृती प्राप्त करना

जैक पूनैन

प्रकाशक

मसीही साहित्य संस्था

70 जनपथ, नई दिल्ली-110001

GAINING GOD'S APPROVAL
by
Zac Poonen

Copyright – Zac Poonen (1983)
This book has been copyrighted to prevent misuse. It should not be reprinted or translated without written permission from the author.

All scripture unless otherwise stated are taken from the New American Standard Bible versions 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977 1995 by the Lockman Foundation. Used by Permission.

For further details Please contact:
Christian Fellowship Centre
40 DaCosta Square,
Bangalore – 560084, India
cfc@cfcindia.com, www.cfcindia.com
Tele: +91-080-25477103, Fax: 080-51251291
Or
Pune Christian Fellowship Church
B-21, B U Bhandari Greens, Dhanori,
Pune - 411015, India.
Tele: +91-98500 67885, 86552 02001, (020) 27029027
Email: reachpunecfc@gmail.com

Printed & Published by
MASIHI SAHITYA SANSTHA
70 Janpath, New Delhi - 110001
Ph: 011-23320253, 23320373
E-mail: mssjanpath@gmail.com

विषय-सूची

अध्याय **पृष्ठ सं.**

हे प्रभु, मुझे ज्योति देना 5

1. बुलाए हुए, चुने हुए, और विश्वासयोग्य पाए गए लोग 7
2. पिता को अति-प्रसन्न करने वाले 12
3. आदम और हव्वा का परखा जाना 21
4. अय्यूब का परखा जाना 29
5. अब्राहम का परखा जाना 39
6. मूसा का परखा जाना 51
7. दाऊद का परखा जाना 64
8. एलीशा और गेहजी का परखा जाना 76
9. पतरस और यहूदा का परखा जाना 85
10. परमेश्वर की सराहना पाए लोगों का झुण्ड 95

हे प्रभु, मुझे ज्योति देना

1. तेरी प्रेम-भरी बुलाहट के जवाब में
अगर मैंने सब कुछ न त्यागा हो;
अगर मैंने तुझ से बचाकर कुछ अपने लिए रख लिया हो,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।
प्रभु, मेरी मदद करना कि मैं रोज़ अपना न्याय ख़ुद कर सकूँ,
और इस नए और जीवित मार्ग में आगे चल सकूँ।
मैं अपने पूरे दिल से तेरी कृपा का अभिलाषी रहूँ,
कि जैसा तू शुद्ध है, ऐसा ही शुद्ध मैं भी हो सकूँ।

2. इस पृथ्वी पर मैं अगर किसी बात को ऐसा मूल्यवान जानू
कि वह मुझे आकर्षित कर भ्रमित कर दे;
और अगर धन मुझे जकड़ कर अपने वश में कर ले,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

3. अगर मेरा पूरा जीवन सिर्फ मेरे ही इर्द-गिर्द,
बस मेरे अपने परिवार के ही चारों तरफ घूम रहा हो;
और अगर मैं एक स्वार्थी जीवन जी रहा होऊँ,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

4. क्या कोई ऐसा भला काम बाक़ी है जो मुझे करना था?
क्या कोई ऐसी जीवात्मा बाक़ी है जिसे मुझे जीतना था?
क्या मैंने सोचे-समझे बिना किसी को दुःख दिया है?

तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

5. अगर किसी की नाकामी ने यह काम न किया हो,
कि मेरे दिल में फिक्र और हमदर्दी न पैदा की हो;
अगर अपने अन्दर मैंने दूसरों का न्याय किया हो,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

6. अगर मैंने मनुष्य की प्रशंसा को ज़रूरी जाना हो,
और अपने स्वार्थ की खोज में रहकर सूली को नकारा हो;
अगर मैंने मनुष्यों के ठट्ठों का भय माना हो,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

7. पार्थिव परिश्रमों और चिंताओं के बोझ की वजह से,
अगर मैंने प्रार्थना में तेरी सामर्थ्य की खोज त्याग दी हो;
और अगर मैंने तेरी अभिलाषा करना छोड़ दिया हो,
तब, हे प्रभु, मुझे ज्योति देना कि मैं देख सकूँ।

जैक पूनैन

अध्याय 1

बुलाए हुए, चुने हुए, और विश्वासयोग्य पाए गए लोग

परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जाना यह एक बात है; लेकिन परमेश्वर की सराहना पाना, यह बिलकुल अलग बात है।

वे बचे हुए लोग जो विश्वासयोग्य पाए गए

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर के मेमने की जय के बारे में बात करती है। लेकिन हमें बताया गया है कि मेमने की एक शिष्यों की सेना है जिनके द्वारा वह अपने युद्ध लड़ता है और प्रबल होता है। इन शिष्यों को चुने हुए और विश्वासयोग्य लोग कहा गया है।

"मेमना प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है, और जो उसके साथ हैं वे बुलाए हुए, चुने हुए, विश्वासयोग्य लोग हैं" (प्रका. 17:14)।

बुलाए हुए बहुत हैं, लेकिन चुने हुए थोड़े हैं, लेकिन जो विश्वासयोग्य हैं, वे तो और भी कम हैं। ये वे जय पाने वाले लोग हैं, जिनका उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 10 बार किया गया है। ये लोग यीशु के वे शिष्य हैं जो न सिर्फ परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए गए हैं, बल्कि ये वे हैं जिन्हें उसने अनेक परिस्थितियों द्वारा परखा है और जिनकी उसने सराहना की है।

यीशु जब पृथ्वी पर था, तब उसमें आस्था रखने वाले बहुत लोग थे, लेकिन उसने अपने आपको उनमें से किसी के भरोसे पर नहीं छोड़ा।

“जब यीशु यरूशलेम में था... तब बहुत लोगों ने उन चिन्हों को देखकर जिन्हें वह दिखाता था, उसके नाम पर विश्वास किया। लेकिन जहाँ तक यीशु का सम्बंध था, उसने अपने आपको उनके भरोसे पर न छोड़ा क्योंकि वह सबको जानता था” (यूहन्ना 2:23,24)।

यीशु जानता था कि उसमें विश्वास करने वाले लोग फिर भी उनके अपने स्वार्थ की खोज में थे और वे उसके पास सिर्फ व्यक्तिगत आशिषों के लिए ही आते थे। उनके पाप क्षमा हो चुके थे, लेकिन फिर भी वे जय पाना नहीं चाहते थे। एक जय पाने वाला होने के लिए यह ज़रूरी है कि एक व्यक्ति स्वयं अपने स्वार्थ की खोज में रहने से मुक्त हो जाए।

जब गिदोन ने इस्राएल के शत्रुओं से लड़ने के लिए एक सेना तैयार की, तब उसके साथ 32,000 लोग थे। लेकिन परमेश्वर जानता था कि वे सभी पूरे हृदय से समर्पित नहीं थे। इसलिए परमेश्वर ने उनकी संख्या में कटौती की। सबसे पहले डरने वालों को वापिस भेज दिया गया। लेकिन फिर भी 10,000 लोग बाक़ी रह गए थे। फिर उन्हें नदी के पास ले जाकर परखा गया। उस परीक्षा में से सिर्फ 300 लोग ही गुज़र सके और यही वे लोग थे जिन्होंने परमेश्वर की सराहना पाई (न्यायियों 7:1-8)।

उन 10,000 लोगों के पानी पीने के तरीके से परमेश्वर ने यह तय किया कि गिदोन की सेना में किसे शामिल किया जाना है। वे यह नहीं जानते थे कि वे परखे जा रहे हैं। वे 9700 लोग जिन्होंने घुटने के बल बैठकर पानी पीया, वे अपनी प्यास बुझाते समय शत्रु

के बारे में भूल गए थे। सिर्फ 300 लोग ही सचेत थे, और उन्होंने खड़े-खडे ही हाथों के चुल्लू में से पानी पीया।

प्रतिदिन के जीवन के परखा जानाः

जीवन की सामान्य बातों में ही परमेश्वर हमें परखता है - धन, भोग-विलास, पार्थिव मान-सम्मान और सुख-सुविधा आदि के प्रति हमारे मनोभाव में। गिदोन की सेना की तरह, हमें भी इस बात का अहसास नहीं होता कि परमेश्वर हमें परख रहा है। यीशु ने हमें चेतावनी दी थी कि हम संसार की चिंताओं के बोझ तले न दब जाएं। उसने कहा,

"सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे हृदय दुराचार, पियक्कड़पन, और जीवन की चिंताओं के भार से दब जाएं और वह दिन एकाएक तुम पर फंदे की भांति आ जाए" (लूका 21:34)।

पौलुस ने यह कहते हुए कुरिन्थियों के मसीहियों को उत्साहित कियाः

"अब से जिनकी पत्नी हो वे ऐसे रहें मानो उनकी पत्नी नहीं है; और रोने वाले ऐसे हों मानो रोते नहीं; और आनन्द करने वाले ऐसे हों मानो आनन्द नहीं करते; और जो मोल लेते हैं वे ऐसे हों मानो उनके पास कुछ नहीं है; और संसार का उपभोग करने वाले ऐसे हों मानो वे उसमें लिप्त नहीं; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं... मैं ये बातें तुम्हारे ही लाभ के लिए कहता हूँ... कि तुम्हारा मन प्रभु की सेवा में निर्विघ्न लगा रहे" (1 कुरि. 7:29-35)।

हम संसार की किसी भी बात को यह अनुमति न दें कि वह हमें प्रभु की भक्ति की तरफ से मोड़ दे। संसार की उचित बातों का फंदा पापमय बातों से ज़्यादा मज़बूत होता है, क्योंकि उचित बातें बहुत निर्दोष और सुरक्षित नज़र आती हैं!

हम अपनी प्यास बुझा सकते हैं - लेकिन हमें अपने हाथों का चुल्लू बनाकर सिर्फ उतना ही पीना चाहिए जितना ज़रूरी हो। हमारे मन पृथ्वी की नहीं स्वर्गीय बातों में लगे होने चाहिए। अगर हमें यीशु का शिष्य होना है, तो हमें अपना सब कुछ छोड़ देना होगा। एक खींचे गए रबर-बैन्ड की तरह, हमारे मन भी पृथ्वी की ज़रूरी बातों को पूरा करने वाले होने चाहिए। लेकिन उन बातों के पूरा हो जाने के बाद, जैसे रबर-बैन्ड अपनी पहली दशा में लौट आता है, वैसे ही हमारे मन भी प्रभु और अनन्त की बातों की तरफ लौट आने चाहिए। "अपने मन पृथ्वी पर की नहीं, लेकिन स्वर्गीय बातों" पर लगाने का यही अर्थ है (कुलु. 3:2)।

लेकिन अनेक विश्वासियों के मामले में, यह रबर-बैन्ड दूसरी दिशा/दशा में रहता है। उनके मन अनन्त की बातों के बारे में सोचने के लिए कभी-कभी खींचे जाते हैं, लेकिन फिर वे इस संसार की बातों के बारे में सोचने वाली उनकी सामान्य दशा में लौट आते हैं!

परमेश्वर की सराहना पाए हुएः

पौलुस ने तीमुथियुस को यह कहते हुए उत्साहित किया,

"कोई भी योद्धा जो लड़ाई पर जाता है, अपने आपको प्रतिदिन के झंझटों में इसलिए नहीं फंसाता क्योंकि वह अपने भर्ती करने वाले को प्रसन्न करना चाहता है" (2 तीमु. 2:4)।

पौलुस वहाँ तीमुथियुस को यह नहीं बता रहा था कि उद्धार कैसे पाना है, बल्कि यह कि मसीह के लिए एक प्रभावशाली योद्धा कैसे बनना है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "अपने आपको परमेश्वर का ऐसा ग्रहणयोग्य कार्य करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जिससे लज्जित होना न पड़े" (2 तीमु. 2:15)। तीमुथियुस

पहले ही परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया गया था। अब उसे परमेश्वर की सराहना पाने के लिए परिश्रम करना था।

स्वयं पौलुस मसीह द्वारा मसीही सेवकाई में इसलिए रखा गया था क्योंकि उसने परमेश्वर की सराहना पा ली थी।

वह कहता है, "मैं अपने प्रभु यीशु मसीह को धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, क्योंकि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझ कर यह सेवा दी है" (1 तीमु. 1:12)।

पौलुस बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य लोगों में से था, और उसकी यह अभिलाषा थी कि तीमुथियुस भी उस गिनती में शामिल हो।

लेकिन सराहे जाने से पहले, पौलुस परखा गया था।

हमें भी परखा जा रहा है।

परमेश्वर जब तक एक व्यक्ति को परख नहीं लेता, तब तक वह अपने आपको किसी के प्रति वचनबद्ध नहीं करता।

हम जिन लोगों के परखे जाने के वृत्तान्त पवित्र शास्त्र में पाते हैं - जिनमें से कुछ को सराहा गया था और कुछ सराहना के लायक़ न पाए गए थे - वे हमारे लिए बहुत मूल्यवान हो सकते हैं, क्योंकि वे बातें हमारे मार्गदर्शन के लिए ही लिखी गई हैं।

अध्याय 2

पिता को अति-प्रसन्न करने वाले

नई वाचा में, हम उसके बारे में पढ़ते हैं जिससे पिता अति-प्रसन्न था, और लोगों के एक समूह के बारे में भी पढ़ते हैं जिनसे पिता प्रसन्न नहीं था। इन विपरीत बातों का अध्ययन बहुत रोचक है।

परमेश्वर इनसे प्रसन्न नहीं था:

जंगल में जो 6 लाख इस्राएली उनके अविश्वास की वजह से मर मिटे, उनके बारे में यह लिखा है कि फ्परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं हुआ था" (1 कुरि. 10:5)। ये इस्राएली मिस्र में से मेमने के लहू द्वारा छुड़ाए गए थे (जो मसीह द्वारा छुड़ाए जाने का प्रतीक था), लाल सागर और बादल में उनका बपतिस्मा हुआ था (जो पानी के बपतिस्मे और आग के बपतिस्मे का प्रतीक था) (1 कुरि. 10:2), फिर भी परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं था।

लेकिन परमेश्वर उनके प्रति बहुत भला बना रहा था और उसने एक अलौकिक रूप में उनकी सारी दैहिक और भौतिक ज़रूरतों को पूरा किया था। "इन 40 वर्षों में न तो तेरे तन के वस्त्र पुराने हुए, और न तेरे पैर ही सूजे" (व्य.वि. 8:4)।

परमेश्वर ने उनकी सारी बीमारियों को भी चंगा किया था। बाइबल कहती है कि "उनमें कोई भी बीमार और कमज़ोर व्यक्ति नहीं था" (भजन. 105:37 - टी.एल.बी.)।

परमेश्वर ने उनके लिए बहुत से चमत्कार किए। असल में, संसार के पूरे इतिहास में, कोई भी ऐसा जन-समूह नहीं हुआ है जिसने

उन अविश्वासी इस्राएलियों जितने चमत्कार देखे हों, जिनसे " परमेश्वर 40 सालों तक क्रोधित रहा था" (इब्रा. 3:17)।

इससे हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर शारीरिक विश्वासियों की भी प्रार्थनाओं का जवाब देता है, और अगर ज़रूरत हो, तो उनकी पार्थिव ज़रूरतों को एक अलौकिक रूप में भी पूरा करता है। परमेश्वर हमारे लिए चमत्कार करता है, इस हक़ीक़त से हमारी आत्मिकता के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। इससे सिर्फ यही साबित होता है कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो उसके सूर्य को धर्मी और अधर्मी दोनों पर उदय करता है!

यीशु ने हमें यह चेतावनी भी दी है कि न्याय के अंतिम दिन, ऐसे अनेक लोग अस्वीकार कर दिए जाएंगे जिन्होंने उसके नाम में चमत्कार किए थे क्योंकि उन्होंने अपने जीवन पाप में बिताए थे। उसने कहा, "उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से नबूवत नहीं की थी, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला था, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए थे?' तब मैं उनसे स्पष्ट कहूँगा, 'मैंने तुमको कभी नहीं जाना; हे कुकर्मियों, मुझसे दूर हटो'" (मत्ती 7:22,23)। यह स्पष्ट है कि वह ऐसे मसीही प्रचारकों और शिक्षकों के बारे में बात कर रहा था जिन्होंने उसके नाम में असली चमत्कार किए थे। यीशु के शब्दों से यह पता चलता है कि इनमें से बहुत लोग (थोड़े या सब लोग नहीं, लेकिन बहुत लोग) जिनकी चिन्ह्-चमत्कारों की सेवकाइयाँ हैं, वे उनके निजी जीवनों में और उनके विचारों और मनोभावों में पाप से मुक्त नहीं हैं। मसीह के न्यायासन के सामने उनका पर्दाफाश हो जाएगा।

यहाँ हमें एक स्पष्ट रूप में यह सिखाया गया है चमत्कारों का होना अपने आपमें इस बात का संकेत नहीं है कि एक व्यक्ति ने

परमेश्वर की सराहना पा ली है। क्या हमने यह बात पूरी तरह समझ ली है? अगर नहीं, तो हम धोखा खाएंगे।

परमेश्वर उससे अति-प्रसन्न थाः

पुरानी वाचा के उन इस्राएलियों की तुलना में जिनसे परमेश्वर प्रसन्न नहीं था, हम नई वाचा में यीशु के बारे में पढ़ते हैं जिससे पिता अति-प्रसन्न था।

जब यीशु की उम्र 30 साल की थी, तब पिता ने उसके बारे में स्वर्ग से सब लोगों के सुनते हुए ये शब्द बोले, "ये मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति-प्रसन्न हूँ" (मत्ती 3:17)। और उस समय तक यीशु ने न तो एक भी चमत्कार किया था, और न ही एक भी प्रचार किया था!

तब वह कौन सी भेद की बात थी उसकी वजह से वह परमेश्वर द्वारा सराहा गया था? यह स्पष्ट है कि इसकी वजह उसकी सेवकाई नहीं थी क्योंकि उसने उस समय तक अपनी सेवकाई शुरू नहीं की थी। इसकी वजह उसके जीने का तरीक़ा था। हम अपनी सेवकाई की सफलता की वजह से नहीं बल्कि हमारे प्रतिदिन की परीक्षाओं में विश्वासयोग्य रहने से परमेश्वर की सराहना पाते हैं। यीशु के छुपे हुए 30 सालों के बारे में जो दो बातें हमें बताई गई हैं (मन्दिर में हुई घटना के अलावा) वे ये हैं कि "वह सब बातों में हमारे ही समान परखा गया फिर भी निष्पाप निकला" (इब्रा. 4:15), और यह कि "उसने कभी अपने आपको प्रसन्न नहीं किया" (रोमियों. 15:3)।

उसने विश्वासयोग्य रहते हुए हरेक बात में परीक्षाओं का सामना किया था, और उसने किसी भी बात में कभी अपनी इच्छा को पूरा करना न चाहा था। यही वह बात थी जिससे पिता अति-प्रसन्न था।

हमारी बाहरी उपलब्धियों से सांसारिक लोग और शारीरिक विश्वासी प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर सिर्फ हमारे चरित्र से प्रसन्न होता है। सिर्फ हमारा चरित्र ही हमें परमेश्वर से मान्यता दिला सकता है। इसलिए, अगर हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे बारे में परमेश्वर का क्या मत है, तो हमें जानबूझ कर अपने मन में से अपनी सेवकाई की सारी उपलब्धियों को दूर हटा देना होगा, और सिर्फ अपने वैचारिक जीवन में पाप और स्व-केन्द्रीयता के प्रति अपने मनोभाव के आधार पर स्वयं का मूल्यांकन करना होगा। यही और सिर्फ यही हमारे आत्मिक जीवन का मानक मापदण्ड हो सकता है।

इस वजह से ही, पूरे जगत में भ्रमण करते हुए चंगाई/प्रचार करने वाले एक व्यक्ति, और घर की चार-दीवारी में रहने वाली एक व्यस्त माता, दोनों के पास परमेश्वर की सराहना पाने का एक ही जैसा मौक़ा होता है।

और यही कारण है कि हम मसीह के न्यायासन के सामने यह पाएंगे कि ऐसे अनेक लोग जो मसीही जगत में पहले थे वे अंतिम होंगे, और जिन्हें इस पृथ्वी पर अंतिम समझा गया था (क्योंकि उनकी कोई लोकप्रिय सेवकाई नहीं थी), वे वहाँ पहले होंगे!

घर और काम की जगह में विश्वासयोग्यताः

सब बातों में यीशु हमारा आदर्श उदाहरण है। यीशु के पार्थिव जीवन के पहले 30 साल बिताने के लिए पिता ने मूल रूप में दो जगहें तय की थीं - उसका घर और उसके काम की जगह (बढ़ई की दुकान)। इन दोनों ही जगहों में यीशु के विश्वासयोग्य रहने की वजह से उसने पिता की सराहना पाई थी। यह हमारे लिए बहुत उत्साहजनक बात है, क्योंकि हम अपने आपको ज़्यादातर इन दोनों

जगहों में ही पाते हैं - अपने घर में और अपने काम की जगह में। और मूल रूप में परमेश्वर हमें इन दोनों जगहों में ही परखता है। यीशु का घर एक ग़रीब घर था। युसुफ और मरियम इतने ग़रीब थे कि वे होमबलि के लिए एक मेमने की भेंट भी नहीं चढ़ा सकते थे। व्यवस्था में यह आज्ञा थी कि "लेकिन अगर वह स्त्री मेमना देने में असमर्थ हो, तो वह पण्डुकी या कबूतर के दो बच्चे ले..." (लैव्य. 12:8)। और मरियम और युसुफ ने "जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है - 'एक जोड़ा पण्डुकी या कबूतर के दो बच्चे" लाकर बलि चढ़ाए (लूका 2:24)।

यीशु के कम-से-कम 4 भाई और 2 बहनें थीं, जो सभी उससे छोटे थे और वे एक ही घर में रहते थे। मरकुस 6:3 हमें बताता है कि उसके गाँव के लोग यीशु के बारे में ऐसी बातें करते थे, "क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र है, और जो याकूब, योसेस, यहूदा, और शमौन का भाई है? क्या उसकी बहनें हमारे बीच में नहीं हैं?"

कोई भी इस बात की कल्पना कर सकता है कि उस ग़रीब घर में उसके पालन-पोषण के दौरान यीशु ने कैसे तनावों और परेशानियों का सामना किया होगा। और उसकी पीड़ा को बढ़ाने वाली एक और बात यह थी कि उसके सभी छोटे भाई अविश्वासी थे। ऐसा लिखा है कि "उसके भाई भी उसमें विश्वास नहीं करते थे" (यूह. 7:5)। वे अनेक तरह से उसका मज़ाक उड़ाते होंगे। जब घर में दूसरे लोगों द्वारा उसे परखा जाता होगा, तब उसके लिए कोई ऐसा निजी कक्ष भी नहीं था जहाँ वह एकान्त के कुछ पल बिता पाता। उस घर में भी लड़ाई-झगड़े, खींच-तान, डाँट-फटकार और स्वार्थी बातें होती होंगी (जो हरेक घर में आम बातें होती हैं)। और ऐसे हालातों के बीच में, यीशु भी सब बातों में हमारे ही समान परखा

गया था, फिर भी उसने अपने काम, शब्द, विचार, मनोभाव, उद्देश्य या और किसी तरह से एक बार भी पाप नहीं किया था।

अगर यीशु हमसे अलग किसी दूसरे रूप में आया होता, किसी ऐसे शरीर में जो प्रलोभन/परीक्षा में पड़ने योग्य न होता, तो ऐसे हालातों में एक शुद्ध जीवन जीने में उसकी कोई बड़ाई न होती। लेकिन वह सब बातों में हमारे ही समान बनाया गया था।

परमेश्वर का वचन कहता है, "यह आवश्यक था कि वह सब बातों में अपने भाइयों के समान बने, जिससे कि वह परमेश्वर से सम्बंधित बातों में दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हो सके और लोगों के पापों का प्रायश्चित्त करे" (इब्रा. 2:17)।

वह ऐसी हरेक परीक्षा/प्रलोभन के दबाव में से गुज़रा था जिनका सामना हम अपने जीवनों में करते हैं। यही बात है जो हमें परखे जाने के पलों में हमें बड़ा उत्साहित करती है, कि हम भी जय पा सकते हैं। शैतान हमारी इसी आशा को हमसे छुपा कर चुरा लेना चाहता है जो इस महिमामय सत्य में रखी है कि मसीह हमारी ही देह में आया था, और सब बातों में बिलकुल हमारी ही तरह परखा गया था।

नासरत के एक बढ़ई के रूप में, यीशु ने ऐसी हरेक परीक्षा/प्रलोभन का सामना किया होगा जो कैसा भी काम-धंधा करने वाले हरेक व्यक्ति के सामने आती हैं। लेकिन उसने जिसे भी अपना सामान बेचा, उसे उसने कभी धोखा नहीं दिया था। वह किसी भी चीज़ की ज़्यादा क़ीमत नहीं वसूलता था और हर बात में ईमानदार रहने में, चाहे उसे कोई भी क़ीमत चुकानी या नुक़सान उठाना पड़े, वह कोई समझौता नहीं करता था। नासरत के दूसरे बढ़इयों के साथ उसकी कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं थी। वह सिर्फ अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए ही काम करता था। इस तरह, (एक बढ़ई होते हुए),

ख़रीदने, बेचने और धन के लेन-देन में उसने उन सभी परीक्षाओं का सामना किया जो धन के क्षेत्र में हमारे सामने भी आती हैं। और उसने उन पर जय पाई थी। यीशु बहुत सालों तक कमियों-कमज़ोरियों से भरे अपने पालक माता-पिता की अधीनता में रहा था। इस बात में उसने ज़रूर अनेक भीतरी परीक्षाओं का सामना किया होगा (मनोभावों के परिमण्डल में), लेकिन उसने फिर भी कोई पाप नहीं किया था। मरियम और युसुफ पुरानी वाचा के अधीन थे, और यक़ीनन उन्होंने पाप पर जय नहीं पाई थी। उन्होंने ज़रूर ऊँची आवाज़ों में वाद-विवाद किए होंगे, वैसे ही जैसे (पाप से) हारे हुए विवाहित जोड़ों के बीच में होता है। दूसरी तरफ, यीशु पूरी जय में जी रहा था। फिर भी उसने उन्हें तुच्छ न जाना था। अगर वह उन्हें तुच्छ समझता, तो वह पाप करता। वह उनका आदर करता था, हालांकि वह उनसे कहीं बढ़कर शुद्ध था। इस तरह, हम उसकी नम्रता की सुन्दरता को देखते हैं।

हम देख सकते हैं, कि नासरत में बिताए गए उन 30 सालों के दौरान, यीशु का जीवन नीरस नहीं था, बल्कि वह हर समय परीक्षा के साथ संघर्ष की दशा में रहा था - ऐसा संघर्ष जिसकी तीव्रता हर गुज़रते साल के साथ बढ़ती गई थी, क्योंकि इससे पहले कि वह हमारा मुक्तिदाता और महायाजक बनता, यह ज़रूरी था कि पिता हमारे उद्धार के कर्ता को उन सारी परीक्षाओं में से गुज़ारता जो मनुष्यों के लिए संभावित हैं।

परमेश्वर का वचन कहता है, “जिसके लिए और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसके लिए यह उचित था कि वह बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए उनके उद्धार के कर्ता को दुःख उठाने द्वारा सिद्ध करे” (इब्रा. 2:10)।

ऐसी और भी परीक्षाएं थीं (जैसे पूरे देश में प्रख्यात् हो जाने द्वारा आने वाली परीक्षाएं आदि) जिनका सामना यीशु को उसके पार्थिव जीवन के अंतिम साढ़े तीन साल के दौरान करना था। लेकिन जिन सामान्य परीक्षाओं का सामना हम घरों और काम की जगहों में करते हैं, उसने अपने जीवन के पहले 30 सालों में उनका सामना करते हुए उन पर जय पा ली थी। और पिता ने यीशु के बपतिस्मे के समय उसे अपनी सराहना का प्रमाण-पत्र दिया था।

अगर हमारी आँखें यह देखने के लिए खुल जाएं कि परमेश्वर किस आधार पर हमारी सराहना करता है, तो हमारे जीवन पूरी तरह आंदोलित हो उठेंगे। फिर हममें से कोई एक वैश्विक स्तर की सेवकाई पाने की लालसा नहीं करेगा, बल्कि वह प्रतिदिन के जीवन के परीक्षाओं/प्रलोभनों के पलों में विश्वासयोग्य रहना चाहेगा। हम शारीरिक चमत्कारों की प्रशंसा करना छोड़ देंगे और बदले हुए जीवनों की प्रशंसा करने वाले हो जाएंगे। इस तरह, हमारी प्राथमिकताओं के सही हो जाने से हमारे मन नए हो जाएंगे।

यह जानना कितना ज़बरदस्त उत्साहवर्धन है कि परमेश्वर के सबसे बड़े प्रतिफल और उसकी सबसे बड़ी प्रशंसा उन लोगों के लिए रखी गई है जो उनके सामने आने वाली परीक्षाओं का सामना उसी मनोभाव में करते हैं जिसमें यीशु ने किया था - जो यह हैः

“किसी एक बात में भी पाप करने या अपने पिता की आज्ञा को न मानने की बजाय, मैं मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा।”

फिलिप्पियों 2:5-8 के प्रबोधन का यही अर्थ है जो यह कहता है, “अपने में वही स्वभाव रखो जे मसीह यीशु में था... जो यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि उसने सूली की मृत्यु को भी सह लिया।”

इसलिए, चाहे हमारे दान-वरदान, सेवकाई, लिंग या उम्र कुछ भी क्यों न हो, हममें से हरेक के पास जय पाने के लिए, और बुलाए

हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य लोगों में शामिल होने के लिए, एक-जैसे मौक़े उपलब्ध हैं।

अध्याय 3

आदम और हव्वा का परखा जाना

परमेश्वर ने जब आदम और हव्वा को रचा, तब उसके मन में उनके लिए महान् योजनाएं थीं। लेकिन ये योजनाएं उन्हें परखे बिना पूरी नहीं हो सकती थीं। और इसी वजह से उसने अदन में एक आकर्षक पेड़ को लगाया जिसका फल बहुत स्वादिष्ट था, और उसने उसे भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ कहा। और उसने आदम और हव्वा को उसमें से खाने से मना किया।

आदम और हव्वा की नाकामी सबसे पहले विश्वास की निष्फलता थी। मानवीय व्यक्तिपन जब पूरे भरोसे के साथ परमेश्वर की सिद्ध बुद्धि, प्रेम और सामर्थ्य के सहारे से चलता है, तभी वह विश्वास में रहता/होता है। हव्वा परमेश्वर में ऐसा भरोसा बनाए रखने में नाकाम रही, और इस वजह से ही वह शैतान द्वारा परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने के फंदे में फँसाई गई।

परमेश्वर की बुद्धि में भरोसाः

शैतान ने हव्वा को यह सुझाया कि उन्हें उस पेड़ का फल न खाने देने में परमेश्वर की बुद्धि में कुछ ख़राबी थी। परमेश्वर की आज्ञापालन करने के लिए विश्वास को कभी किसी तार्किक कारण की ज़रूरत नहीं होती। यह हमारी सोच-समझ है जो पहले एक तर्कपूर्ण कारण की माँग करती है। परमेश्वर की आज्ञा का पालन तर्क से नहीं हमेशा विश्वास से होना चाहिए।

पौलुस ने कहा कि उसकी बुलाहट यह है कि वह "गैर-यहूदियों में विश्वास से आज्ञाकारिता उत्पन्न करे" (रोमियों. 1:5)। उसने यह भी कहा कि "यीशु मसीह का सुसमाचार सब जातियों को सुनाया गया है... कि वे विश्वास से आज्ञाकारी बन जाएं" (रोमियों. 16:25,26)।

जैसा कि नीतिवचन 3:5 से भी स्पष्ट हो जाता है, हमारी सोच-समझ विश्वास की दुश्मन होती हैः "तू पूरे हृदय से परमेश्वर पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना।" परमेश्वर की बुद्धि चतुर और होशियार लोगों से छुपी रहती है, लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा वह ऐसे लोगों पर प्रकट की जाती है जो छोटे बच्चों की तरह एक सहज रूप में विश्वास करते हैं। यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखीं और बच्चों पर प्रकट की हैं" (मत्ती 11:25)।

सोच-समझ एक अच्छा नौकर लेकिन बुरी मालिक होती है, इसलिए परमेश्वर द्वारा ठहराई उसकी सही जगह मनुष्य में रहने वाली उसकी आत्मा की दासी होना है - वह आत्मा जो स्वयं पवित्र आत्मा के अधीन रहती है।

परमेश्वर ने आदम को पेड़ का फल न खाने की कोई वजह नहीं बताई थी, क्योंकि वह आदम के विश्वास को अपने में (परमेश्वर में) बढ़ाना चाहता था। और यही वह पहला क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर हमें भी परखता है। जब हममें उस काम की कोई समझ भी नहीं होती जिसे करने के लिए उसने हमें बुलाया है, हम क्या तब भी उसका आज्ञापालन कर सकते हैं? परमेश्वर जब हमें कुछ ऐसा करने के लिए बुलाए जिसके बारे में हमारी अपनी सोच-समझ यह कहे कि वह ग़ैर-ज़रूरी है, तब हम क्या करेंगे?

जब यीशु ने पतरस से कहा कि वह नाव में से बाहर आकर पानी पर चले, तो वह एक ऐसी आज्ञा थी जो पतरस को उसकी सोच-समझ द्वारा बताई जा रही हरेक बात के खिलाफ थी। लेकिन अगर उसने अपनी तर्कपूर्ण सोच-समझ की बात मान ली होती, तो वह उस चमत्कार का अनुभव न कर पाता।

ऐसी और भी बहुत घटनाएं हैं जिनका हम पवित्र शास्त्रों में से उल्लेख कर सकते हैं। और यही अनेक मसीहियों के सामर्थ्यहीन होने की, और उनके जीवनों में परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य का कोई अनुभव न होने की वजह हैः वे विश्वास से नहीं अपनी तार्किक सोच-समझ से जीवन बिताते हैं।

परमेश्वर के प्रेम में भरोसाः

परमेश्वर के प्रेम में पूरा भरोसा करना भी विश्वास है। शैतान ने हव्वा को यह सुझाया कि परमेश्वर उनसे पर्याप्त प्रेम नहीं करता, और इस वजह से ही उसने उस सुन्दर फल को उनकी पहुँच से बाहर रखा था। अगर हव्वा तर्क की बजाय विश्वास से जी रही होती, तो उसने कुछ इस तरह से जवाब दिया होता, "हे शैतान, यह सही है कि मुझे यह बात समझ नहीं आई है कि परमेश्वर ने हमें उस पेड़ का फल खाने से क्यों रोका है। लेकिन मुझे एक बात का निश्चय हैः परमेश्वर हमसे बहुत प्रेम करता है, इसलिए यक़ीनन वह हमें किसी भली वस्तु से वंचित नहीं रखेगा। इसलिए, अगर उसने इस फल को हमारे लिए वर्जित किया है, तो इसकी कोई बहुत अच्छी वजह होगी जिसमें हमारी भलाई रखी होगी।"

यह विश्वास का जवाब होता। लेकिन ऐसा जवाब देने की बजाय वह शैतान के झूठ में फँस गई। परमेश्वर के सिद्ध प्रेम में विश्वास की ढाल ही हमारे लिए "शैतान के अग्नि-बाणों को बुझा" सकती है (इफि. 6:16)।

सारी निराशा और हताशा विश्वास से नहीं बल्कि तर्कपूर्ण सोच-समझ से जीने का नतीजा होता है। सारी चिंता और भय की मूल जड़ भी इसमें ही है। परमेश्वर हमारी परख होने देता है - हमारे साथ उसकी प्रत्यक्ष उपस्थिति के "अहसास" को हटा लेने द्वारा, वह हमें उसके प्रेम पर शक करने की परीक्षा में पड़ने देता है, कि विश्वास में दृढ़ होकर हम परिपक्वता की उस जगह पर पहुँचाए जा सकें, जहाँ वह हमारे द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा कर सके। परमेश्वर ने भले और बुरे के ज्ञान के उस पेड़ केा आकर्षक बनाया क्योंकि आदम और हव्वा सिर्फ इस तरह ही परखे जा सकते थे। क्या वे परमेश्वर के पक्ष में रहते हुए एक ऐसी आकर्षक वस्तु को अस्वीकार करेंगे? या वे परमेश्वर को अस्वीकार करते हुए स्वयं उन्हें प्रसन्न करने वाली वस्तु का चुनाव करेंगे?

हमारी परीक्षा के समयों में हमारे सामने भी यही चुनाव होता है। और यही वजह है कि परमेश्वर ने परीक्षा/प्रलोभन को ऐसा आकर्षक होने की अनुमति दी है। जब हम किसी ऐसी वर्जित वस्तु को, जो वास्तव में आकर्षक होती है और जिसकी तरफ हम स्वाभाविक रूप में एक ज़बरदस्त तरीक़े से खींचे जाते हैं, और जिसके बारे में हम जानते हैं कि उसका उपभोग हमें बहुत आनन्दित कर सकता है, तब उसे अस्वीकार करने द्वारा हम यह साबित करते हैं कि हम परमेश्वर से पूरे हृदय से प्रेम करते हैं।

और इसी तरह हम परमेश्वर के सिद्ध प्रेम में अपना विश्वास भी प्रमाणित करते हैं - यह भरोसा रखते हुए कि अगर परमेश्वर ने किसी बात को वर्जित किया है, तो यह उसने हमारी पूरी भलाई के लिए अपने सिद्ध प्रेम में ही किया है। इस तरह, पाप करने और परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने की हरेक परीक्षा हमारे विश्वास की परख बन जाती है। विश्वास से जीने का अर्थ यह भरोसा रखना

है कि परमेश्वर की हरेक आज्ञा एक ऐसे हृदय में से आती है जिसमें सिद्ध प्रेम है और जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ चाहता है।

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को दस आज्ञाएं दीं, तब मूसा ने उनसे कहा, "परमेश्वर इसलिए आया है कि तुम्हें परखे" (निर्ग. 20:20)। व्यवस्थाविवरण 33:2,3 में लिखा है, "उसके दाहिने हाथ में उनके लिए ज्वालामयी व्यवस्था थी। निःसंदेह, इससे यह साबित होता है कि वह अपनी प्रजा से प्रेम करता है।" क्या वे यह विश्वास करेंगे कि यह ज्वालामयी व्यवस्था उनके लिए परमेश्वर के प्रेम का प्रमाण थी? यही उनकी परीक्षा थी।

जहाँ हव्वा परमेश्वर में भरोसा बनाए रखने में नाकाम हुई थी, वहीं इस्राएली भी नाकाम हुए और उन्होंने भी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।

लेकिन यही वह जगह है जहाँ यीशु ने जय पाई थी। उसने अपना जीवन विश्वास में व्यतीत किया। जंगल में शैतान उसके सामने जो भी परीक्षा लाया, उसे इन सहज शब्दों में नकार दिया गया, "ऐसा लिखा है।" यीशु परमेश्वर के हरेक शब्द के प्रति आज्ञाकारी था।

परमेश्वर का वचन मनुष्य के लिए एक सिद्ध प्रेम में दिया गया था, और यीशु ने विश्वास में उसका पालन किया था। वह इसी तरह हमारा अग्रदूत बना है। अगर हमें परमेश्वर के लोगों की प्रभावशाली रूप में सेवा करनी है, तो हमारे लिए भी विश्वास से जीना और अपने विश्वास को परमेश्वर की आज्ञाओं के पूरे पालन में प्रदर्शित करना अनिवार्य है। हम सिर्फ इस तरह ही दूसरों के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं।

परमेश्वर की सामर्थ्य में भरोसाः

परमेश्वर की सामर्थ्य में पूरा भरोसा भी विश्वास है। अगर हव्वा ने बुराई की शक्ति के खिंचाव का सामना करने में अपने आपको अयोग्य पाया था, तो वह मदद पाने के लिए परमेश्वर को पुकार सकती थी, और उसे वह मदद मिली होती। परमेश्वर की सामर्थ्य बुराई की हरेक शक्ति के खिंचाव पर जय पाने के लिए काफी होती है।

अपनी देह में रहने के दिनों में, यीशु ने यह सामर्थ्य पाने के लिए पुकारा था, और उसने वह पाई थी। इस वजह से ही उसने कभी कोई पाप नहीं किया था। यीशु के बारे में हमें बताया गया है, "अपनी देह में रहने के दिनों में मसीह ने उससे जो उसे बचा सकता था, ऊँची आवाज़ में पुकार कर और आँसू बहा-बहाकर प्रार्थनाएं और विनतियाँ कीं, और उसके ईश्वरीय भय (आज्ञाकारिता) की वजह से उसकी सुनी गई।"

हमें यह भी बताया गया है, "पुत्र होने पर भी उसने दुःख सह-सहकर आज्ञापालन करना सीखा" (इब्रा. 5:7,8)।

और अब हमें यह आज्ञा दी गई है कि हम साहस के साथ कृपा के सिंहासन के पास आएं और हमारी ज़रूरतों में मदद पाने के लिए कृपा माँगें। "हम साहस के साथ कृपा के सिंहासन के पास आएं कि हम पर दया हो और कृपा पाएं कि ज़रूरत के समय हमारी सहायता हो" (इब्रा. 4:16)।

परमेश्वर पृथ्वी पर साक्षी ढूंढ रहा है - उसकी सिद्ध बुद्धि, प्रेम और सामर्थ्य के सच्चे साक्षी।

जब मसीही लोग नई वाचा की आज्ञाओं को बदल देते हैं, तब वे परमेश्वर की बुद्धि में उनका भरोसा न होने की साक्षी देते हैं। इस तरह, वे यह संकेत देते हैं कि परमेश्वर की सर्व-सामर्थ्य 20वीं शताब्दी के अनोखे दबावों का पूरी तरह सामना नहीं कर सकती!

यीशु ने कहा, "इसलिए जो भी इन छोटी-छोटी आज्ञाओं को तोड़ेगा और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को भी देगा, वह परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलाएगा; लेकिन जो इनका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखाएगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान् कहलाएगा" (मत्ती 5:19)।

परमेश्वर उसके वचन की छोटी आज्ञाओं के प्रति हमारे मनोभाव द्वारा हमारे आज्ञापालन और हमारे विश्वास को परखता है। बड़ी आज्ञाएं, जैसे, "तू हत्या न करना, तू व्यभिचार न करना आदि," का पालन ज़्यादातर मसीहियों द्वारा किया जाता है - बल्कि, अनेक ग़ैर-मसीही भी इनका पालन करते हैं। लेकिन हम परमेश्वर की सराहना पाएंगे या नहीं, इसका फैसला छोटी आज्ञाओं के प्रति हमारे मनोभाव द्वारा तय होगा।

यीशु ने कहा, "जो कोई उसकी पत्नी को तलाक देकर किसी दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है" (मरकुस 10:11)। इस एक ही आज्ञा के खुलकर उल्लंघन किए जाने से, और मसीही दायरों में (ख़ास तौर पर पश्चिमी देशों में) तलाक और पुनर्विवाह के प्रति एक लचीला, सांसारिक मनोभाव बना लेने से, सिर्फ इस एक बात में, शैतान ने सफलतापूर्वक ऐसे मसीहियों को यीशु की आज्ञा को बदल देने वाला बना दिया है जो अपनी सुविधा और भोग-विलासिता चाहते हैं।

परमेश्वर का वचन कहता है, "जो स्त्री सिर उघाड़े प्रार्थना या नबूवत करती है, अपने सिर का अपमान करती है... अगर स्त्री अपना सिर न ढांके तो अपने बाल भी कटवा ले" (1 कुरि. 11:5-6)।

यह एक मामूली बात है। लेकिन "पश्चिमी रंग में रंगी" कलीसियाओं में से स्त्रियों के सिरों से "सिर का ओढ़ना" हट जाना आज के

मसीहियों में परमेश्वर के वचन के प्रति आदर की कमी का एक और संकेत है।

पानी के बपतिस्मे के बारे में भी, जिसका आग्रह यीशु और उसके शिष्यों किया था, अब मसीही दायरों के "मिले-जुले मसीही मतों" में प्रचार नहीं किया जाता, क्योंकि वे किसी के लिए ठोकर का कारण नहीं बनना चाहते। आज के मसीहियों से अगर मनुष्य प्रसन्न हैं, तो उन्हें परमेश्वर को अप्रसन्न करने में कोई संकोच नहीं होता है!

"क्या परमेश्वर ने सचमुच ऐसा कहा है...?" यह शैतान द्वारा हव्वा से पूछा गया सवाल था। और आज के मसीही जगत में भी वह परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञाओं को तोड़ने के लिए इसी सवाल का इस्तेमाल करता है।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को परखा, और वे नाकाम हुए।

आज, आप और मैं भी परखे जा रहे हैं।

अध्याय 4

अय्यूब का परखा जाना

बाइबल में परमेश्वर के लोगों की और परमेश्वर को निराश करने वाले लोगों की जीवन-गाथाएं हमारे मार्ग-दर्शन और हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं। अगर हम उन पर मनन करें, और अपने कान पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनने के लिए खुले रखें, तो हम उनमें से बहुत-कुछ सीख सकते हैं।

जब हम पुरानी वाचा के लोगों के बारे में पढ़ते हैं, तो जो एक बात हमें अपने मन में याद रखनी चाहिए, वह यह है कि वे सभी एक ऐसे समयकाल में हुए थे जो यीशु मसीह के साथ आने वाली "कृपा" से पहले का समयकाल था। "क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई, लेकिन कृपा और सच्चाई तो यीशु मसीह के द्वारा पहुँची" (यूहन्ना 1:17)।

इसलिए, परमेश्वर ने भी उनसे नई वाचा के मानक मापदण्ड तक ऊँचा होने की अपेक्षा नहीं रखी थी।

इसका चित्रण हम मत्ती 19:8,9 में पाते हैं। वहाँ यीशु ने फरीसियों को यह समझाया कि मूसा ने पुरानी वाचा में क्यों तलाक की अनुमति दी थी। उसने कहा, फ्तुम्हारे मन की कठोरता के कारण मूसा ने तुम्हें पत्नी को तलाक देने की अनुमति दी।" लेकिन नई वाचा में, परमेश्वर हमारे कठोर हृदय को निकाल कर हमें एक कोमल हृदय देता है। और इस वजह से अब तलाक की अनुमति नहीं है।

परमेश्वर को "धर्मियों को परखने वाला" कहा गया है (यिर्म. 20:12) वह किसी मनुष्य को बुराई के लिए प्रलोभित नहीं करता। फ्बुरी बातों से न तो परमेश्वर की परीक्षा की जा सकती है, और न ही वह स्वयं किसी की परीक्षा करता है" (याकूब 1:13)।

लेकिन वह धर्मियों को ज़रूर परखता है।

एक उदाहरण-स्वरूप आदर्श पुरुषः

अय्यूब परमेश्वर के चुने हुए सेवकों में से एक था। परमेश्वर उसकी तरफ इशारा करके शैतान से यह कह सकता था कि वह पृथ्वी पर एक ऐसा पुरुष था जो उसके सब तौर-तरीक़ों में परमेश्वर का भय मानता था। प्रभु ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि पृथ्वी पर उसके जैसा निर्दोष और खरा, और परमेश्वर का भय मानने वाला, और बुराई से दूर रहने वाला दूसरा कोई नहीं है" (अय्यूब 1:8)।

परमेश्वर ने अय्यूब की समझदारी, उसकी योग्यताओं या उसकी धन-सम्पत्ति के बारे में कोई बात नहीं की थी - क्योंकि इन बातों की परमेश्वर की नज़र में कोई क़ीमत नहीं है। उसने सिर्फ उसकी शुद्धता और खराई की तरफ ही इशारा किया। यीशु की ही तरह, अय्यूब की उपलब्धियों या उसकी सेवकाई ने नहीं बल्कि उसके चरित्र ने परमेश्वर के हृदय को आनन्दित किया था।

शैतान के पास भी अलौकिक दान-वरदान और चतुराई-भरी सोच-समझ है। उसके पास बाइबल का ज्ञान भी है! लेकिन परमेश्वर जिस बात की खोज में है वह चरित्र है। जब परमेश्वर हमें परखता है, तो वह हमारे बाइबल के ज्ञान को नहीं, हमारे चरित्र को परखता है।

जब परमेश्वर एक पुरुष की तरफ देखकर उसमें गौरान्वित होना चाहता है, जिसकी तरफ इशारा करते हुए वह उसे शैतान को

दिखा सकता है, तो वह एक चरित्रवान व्यक्ति की खोज करता है - एक निर्दोष और खरा व्यक्ति, जो परमेश्वर का भय मानता है, और बुराई से घृणा करता है।

यह हो सकता है कि दूसरे विश्वासियों के बीच में हमारी एक आत्मिक व्यक्ति की छवि हो। लेकिन क्या परमेश्वर, जो हमें अन्दर से बाहर तक जानता है, हमें शैतान को दिखाते हुए हमारी तरफ इशारा कर सकता है? जैसा प्रमाण-पत्र परमेश्वर ने अय्यूब को दिया था, वह पृथ्वी पर मिलने वाले किसी भी सम्मान से बढ़कर था। मसीही जगत के खोखले सम्मान भी उसकी तुलना में बेकार के कूड़े से ज़्यादा और कुछ नहीं हैं।

इसलिए सबसे ज़रूरी सवाल यह नहीं है, "मेरी आत्मिकता के बारे में लोगों का क्या विचार है?" बल्कि यह "क्या परमेश्वर मेरी तरफ इशारा करके शैतान को दिखाते हुए मुझमें गौरान्वित महसूस कर सकता है?"

शैतान का पहला क़दमः

जब परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब के बारे में बोला, तब शैतान ने यह कहा कि अय्यूब इसलिए परमेश्वर की सेवा कर रहा था, क्योंकि उसे ऐसा करते हुए फ़ायदा हो रहा था। "तब शैतान ने परमेश्वर को जवाब दिया, 'क्या अय्यूब परमेश्वर का भय अकारण मानता है? क्यों तूने उसके और उसके घर के और जो कुछ उसका है उसके चारों तरफ बाड़ा नहीं बाँध रखा है? तूने उसके हाथों के काम पर आशिष दी है, और देश में उसकी सम्पत्ति बढ़ गई है। लेकिन अब जो कुछ उसका है, उस पर अपना हाथ तो लगा, और वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा" (अय्यूब 1:9-11)।

परमेश्वर ने इस दोष को स्वीकार नहीं किया और शैतान को यह अनुमति दे दी कि वह स्वयं यह जान ले कि उसका यह आरोप

सच्चा नहीं था। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह अय्यूब की खराई को जानता था।

हम अपने बारे में क्या कहें? क्या हम भौतिक लाभ के लिए परमेश्वर की सेवा करते हैं? अगर शैतान हममें से किसी की तरफ इशारा करते हुए हमें एक ऐसा व्यक्ति कहे जो अपने लाभ के लिए परमेश्वर की सेवा करता है, तब क्या परमेश्वर को यह मानना पड़ेगा कि हम पर लगाया गया शैतान का आरोप सही है?

अफसोस, क्योंकि भारत ऐसे मसीही सेवकों और पास्टरों से भरा पड़ा है जो व्यक्तिगत लाभ के लिए मसीही सेवा में हैं - कुछ वेतन पाने के लिए, कुछ सम्मान और पद पाने के लिए, और कुछ मुफ्त में पश्चिमी देशों की यात्राएँ करने के लिए। जो भी व्यक्तिगत लाभ के लिए मसीही काम करता है वह परमेश्वर की नहीं मामोन (धन के देवता) की सेवा करता है। परमेश्वर की सच्ची सेवा में हमेशा हमें कुछ क़ीमत चुकानी पड़ेगी।

जब दाऊद प्रभु के लिए बलि चढ़ाने जो रहा था, तब उसके शब्दों पर ध्यान दें। उसने कहा, फ्मैं प्रभु परमेश्वर को ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका मैंने कुछ मूल्य न चुकाया हो" (2 शमू. 24:24)।

ऐसी आत्मा वाले कितने कम लोग हैं!

प्रभु की सच्ची सेवा हमारे लिए भौतिक लाभ का नहीं हानि का कारण होगी। लाभ सिर्फ आत्मिक होगा। दूसरी तरफ, जो बातें हमें भौतिक लाभ पहुँचाती हैं, वे स्वर्गीय यरूशलेम की नहीं बल्कि बेबीलोन की बातें होंगी ।

बाइबल आत्मिक बेबीलोन के बारे में कहती है, "इन वस्तुओं के व्यापारी उसके कारण धनवान हो गए" (प्रका. 18:15)।

अपने स्वार्थ की खोज में रहने वाले मसीही सेवकों के बीच में, पौलुस एक दुर्लभ अपवाद के रूप में तीमुथियुस की तरफ इशारा कर सका था। उसके बारे में उसने कहा, "मेरे पास उसके जैसा कोई दूसरा ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे शुद्ध मन से तुम्हारे लिए चिंता हो। क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं न कि मसीह यीशु की" (फिलि. 2:19-21)।

पौलुस धोखे में नहीं था। वह अपने सह-कर्मियों की आत्मिक दशा को जानता था। परमेश्वर भी हमारे बारे में किसी धोखे में नहीं रहता। लेकिन अय्यूब में परमेश्वर को ऐसा भरोसा था कि उसे परखने के लिए उसने शैतान को अनुमति दे दी। अय्यूब हालांकि अपनी सारी संतानें और अपनी सारी सम्पत्ति खो चुका था, फिर भी उसने परमेश्वर की आराधना और सेवा करना जारी रखा था। उसने कहा, "मैं अपनी माता के गर्भ से नंगा निकला और नंगा ही चला जाऊँगा, परमेश्वर ने दिया और परमेश्वर ने ही लिया, परमेश्वर का नाम धन्य हो" (अय्यूब 1:20-22)।

वह जानता था कि जो कुछ उसका था - बच्चे, धन-सम्पत्ति और उसका स्वास्थ्य भी - वे परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए मुफ्त दान-वरदान थे, और परमेश्वर को यह पूरा अधिकार था कि अगर वह चाहे, तो उन्हें वापिस ले सकता था। एक व्यक्ति वास्तव में तब तक परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता जब तक उसने अपना सर्वस्व न त्याग दिया हो - मतलब, किसी भी वस्तु का स्वामी होने के अपने स्वयं के अधिकार को न त्याग दिया हो।

शैतान का दूसरा क़दमः

फिर परमेश्वर ने शैतान को एक क़दम और आगे बढ़ने दिया और उसे अय्यूब को सिर से पाँव तक फोड़ों से भरने दिया।

बीमारी शैतान की तरफ से आती है। लेकिन परमेश्वर उसे भी अपने सेवकों को पवित्र और सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल कर सकता है। पौलुस की देह में एक काँटा चुभाया गया था, जिसके बारे में उसने ख़ास तौर पर कहा कि वह शैतान की तरफ से आया था। वह परमेश्वर का नहीं शैतान का दूत था। फिर भी परमेश्वर ने उसे रहने दिया (पौलुस के बार-बार प्रार्थना करने के बावजूद), क्योंकि वह पौलुस को नम्र व दीन बनाए रखने का काम कर रहा था। पौलुस कहता है, "प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूँ इसलिए मेरी देह में एक काँटा चुभाया गया है, अर्थात् शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुःख दे और घमण्ड करने से रोके रहे! मैंने इसके बारे में प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि यह मुझसे दूर हो जाए। और उसने मुझसे कहा, 'मेरी कृपा तेरे लिए काफी है क्योंकि मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होता है" (2 कुरि. 12:7-9)।

शैतान का तीसरा क़दमः

शैतान का तीसरा क़दम अय्यूब की पत्नी द्वारा उसे सताया जाना था। तब अय्यूब की पत्नी ने उससे कहा, "क्या तू अभी भी अपनी खराई पर स्थिर है? परमेश्वर की निंदा कर और मर जा" (अय्यूब 2:9)। जब आपकी अपनी पत्नी आपके खिलाफ़ होकर आप पर दोष लगाने लगे, तो यह बात आपकी पवित्रता को एक तीव्र रूप में परखती है। परमेश्वर का वचन यह आज्ञा देता है, "हे पतियो, अपनी पत्नी से प्रेम करो और उनके साथ कटु व्यवहार न करो... उनसे वैसा ही प्रेम करो जैसा मसीह ने कलीसिया से किया और अपने आपको उसके लिए दे दिया" (कुलु. 3:19; इफि. 5:25)।

एक पति को किसी भी परिस्थिति में अपनी पत्नी के प्रति कड़वाहट से भरा हुआ नहीं होना चाहिए; उसे हरेक परिस्थिति में हर समय उससे प्रेम करना चाहिए।

अगर आपकी पत्नी झगड़ालू है, तो शिकायतों से भरे होने और उन लोगों से ईर्ष्या करने की बजाय जिनकी पत्नियाँ भक्तिमय हैं, आपको अपनी परिस्थिति स्वयं को पवित्र करने के एक माध्यम के रूप में देखना चाहिए। परमेश्वर उन्हीं हालातों में आपको यह देखने के लिए परखेगा कि आप उसकी सराहना का प्रमाण-पत्र पाने योग्य हैं या नहीं। जब आपकी पत्नी आपके ऊपर चिल्लाती है और आपको चिढ़ाती है, तो परमेश्वर आपको परख कर यह देखता है कि क्या आप यीशु के सच्चे प्रतिनिधि होने लायक़ या नहीं जिसे उसके अपने घर के लोगों ने ही पागल भी घोषित कर दिया था।

सुसमाचार यह लेखबद्ध करता है, "यीशु के कुटुम्बी उसे पकड़ने के लिए निकले, क्योंकि उनका कहना था, 'उसका चित्त ठिकाने नहीं है'" (मरकुस 3:21)। यीशु ने उस अपमान को धीरज से सह लिया था। हमारी बुलाहट उसके पीछे चलने और उसका प्रतिनिधित्व करनी की है।

शैतान का चौथा क़दमः

शैतान का चौथा क़दम अय्यूब पर उसके प्रचारक मित्रों द्वारा दोष लगाना था (अय्यूब अध्याय 4:25)। अय्यूब के लिए यह सबसे कठोर मार थी, क्योंकि उन प्रचारकों ने उसके पास आकर परमेश्वर के नबियों की तरह यह कहना शुरू कर दिया था कि उसकी सारी बीमारियों और मुसीबतों की वजह उसके गुप्त पाप थे। उन प्रचारकों को यह अहसास नहीं था कि वे अनजाने ही "भाइयों पर दोष लगाने वाले" के प्रतिनिधि बन गए थे (प्रका. 12:10)।

लेकिन परमेश्वर ने अय्यूब को शुद्ध करने के लिए उन्हें ऐसा करने दिया।

कृपा के द्वारा जय पानाः

अय्यूब कृपा-से-पहले के समयकाल में रहता था जिसमें पाप पर जय पाना सम्भव नहीं था। इस वजह से वह अंततः अपने ऊपर तरस खाने, अपने आपको सही ठहराने, व हताशा और विषाद का शिकार हो गया था। कहीं-कहीं अंधकार में से उसके विश्वास की झलक नज़र आ जाती थी, लेकिन वह कभी ऊपर उठने और कभी नीचे गिरने के अनुभव में से गुज़रता रहा था।

लेकिन अब जबकि यीशु मसीह के द्वारा कृपा आ चुकी है, और अगर अब हमें इसी तरह परखा जाए, तो हमें एक पल के लिए भी हताश और निराश होने की ज़रूरत नहीं है। नई वाचा में ये आज्ञाएं हैं, "किसी भी बात की चिंता मत करो... प्रभु में सदा आनन्दित रहो... प्रत्येक बात के लिए धन्यवाद दिया जाए..." आदि (फिलि. 4:6,4)।

पुरानी वाचा में ऐसी आज्ञाएं नहीं दी गई थीं क्योंकि तब तक कृपा नहीं आई थी। लेकिन अब हम हरेक बात में परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं, और अब हमें हर समय एक जय की अवस्था में रखने के लिए हरेक पल में कृपा उपलब्ध है। पौलुस का जयघोष यह था, "परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा जय के जुलूस में हमारी अगुवाई करता है" (2 कुरि. 2:14)।

अब हम अपने बच्चे और अपनी सम्पत्ति खो देने, अपनी पत्नी के दोष लगाने, या अपने साथी-विश्वासियों द्वारा ग़लत समझे जाने और दोष लगाने, या हमारे जीवन में जिन बातों के होने की परमेश्वर अनुमति देता है, उनके होने के बाद भी जय पा सकते हैं।

इस तरह परमेश्वर शैतान को यह दिखाता है कि पृथ्वी पर उसके ऐसे लोग बचे हुए हैं जो न सिर्फ उस व्यवहार में उसके अधीन रहते हैं जो वह उनके साथ करता है, बल्कि वे आनन्द के साथ ऐसी हरेक परीक्षा को भी स्वीकार करते हैं क्योंकि उन्हें यक़ीन होता है कि ये मामूली दुःख-तकलीफें परमेश्वर द्वारा इसलिए तैयार की गई हैं कि उनमें अनन्त महिमा की एक वज़नदार बात तैयार करे। बाइबल कहती है, "क्योंकि हमारा पल भर का यह हल्का सा क्लेश एक ऐसी चिरस्थाई महिमा को उत्पन्न कर रहा है जो अतुल्य है। हमारी दृष्टि उन वस्तुओं पर नहीं जो दिखाई देती हैं, बल्कि उन वस्तुओं पर हैं जो अदृश्य हैं" (2 कुरि. 4:17,18)।

शैतान और उसके दूतों के सामने साक्षीः

नई वाचा हमें बताती है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह कलीसिया द्वारा उसकी बुद्धि को स्वर्गीय स्थानों में प्रधानों और अधिकारियों पर प्रकट करे। इफिसियों 3:10 कहता है, "अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में है प्रकट किया जाए।" इफिसियों 6:12 हमें बताता है कि ये प्रधान स्वर्गीय स्थानों में विचरण करने वाली दुष्टात्माएं हैं।

जो कुछ हमारे साथ होता है वह आकस्मिक नहीं होता, बल्कि वह ख़ास तौर पर हमारे लिए तैयार किया जाता है, और उसका वज़न "परमेश्वर की पूर्व-निश्चित योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार" पहले से तय होता है (कि वे बातें हमारे सहने से ज़्यादा न हो जाएं) (प्रेरितों. 2:23); इसमें यह दोहरा लक्ष्य पूरा होता है कि एक तरफ तो हमें मसीह की समानता में बदला जाता है, दूसरी तरफ स्वर्गीय स्थानों में शैतान की आत्मिक शक्तियों के सामने यह प्रदर्शित

किया जाता है कि पृथ्वी पर अभी भी परमेश्वर के ऐसे लोग हैं जो विश्वास में उससे प्रेम करेंगे, उसका आज्ञापालन करेंगे, और हरेक परिस्थिति में उसकी स्तुति करेंगे। हरेक परीक्षा जिसमें से हम गुज़रते हैं, वह हमारे विश्वास की ही परीक्षा होती है। अपने समय में, अय्यूब भी यह कह सका था, "मेरे साथ जो कुछ हो रहा है, परमेश्वर वह पूरी तरह से जानता है" (अय्यूब 23:10 - टी.एल.बी.)।

आज हम एक क़दम आगे बढ़कर यह कह सकते हैं, "मेरे साथ होने वाली हरेक बात की परमेश्वर योजना बनाता है।"

क्या हम वास्तव में यह विश्वास करते हैं कि जो कुछ हमारे साथ होता है, उन सब बातों की योजना परमेश्वर ने उसकी सिद्ध बुद्धि और प्रेम में तैयार की है, और यह कि उसकी सामर्थ्य ऐसी सर्वशक्तिशाली है कि वह सही समय पर हमारी परीक्षाओं/प्रलोभनों में से हमें छुड़ा लेगा?

क्या परमेश्वर आपमें और मुझमें ऐसे पुरुषों को पाएगा जिन्हें वह शैतान को बेधड़क होकर ऐसे लोगों के रूप में दिखा सकेगा जो किसी भी हालात में कभी शिकायत नहीं करते, कुड़कुड़ाते नहीं, बल्कि हर समय सब बातों के लिए सिर्फ धन्यवाद ही देते हैं?

अध्याय 5

अब्राहम का परखा जाना

अब्राहम के जीवन में एक ऐसा दिन आया, परमेश्वर द्वारा उसे बुलाने के लगभग 50 साल बाद, जब परमेश्वर ने उसे अपनी सराहना का प्रमाण-पत्र दिया, "अब मैं जान गया हूँ कि तू परमेश्वर का भय मानता है" (उत्पत्ति 22:12)।

यह किसी बाइबल कॉलेज की तुच्छ डिग्री या ईश्वरीय भक्ति की कोई मानक पदवी नहीं थी! ऐसे कागज़ों के जिन टुकड़ों के जिनके पीछे आज के मसीही लगे रहते हैं, अब्राहम ने उन्हें दो कौड़ी का भी न समझा होता। वह असली वस्तु चाहता था - उसके जीवन के लिए परमेश्वर की सराहना का प्रमाण-पत्र - और वह उसने पा लिया।

मोरिय्याह पहाड़ पर उपाधि-ग्रहण दिवस तक पहुँचने का रास्ता आसान नहीं था! लेकिन परमेश्वर के मुख से ये शब्द सुनने के लिए अब्राहम को जिन सभी बातों में से होकर गुज़रना पड़ा था, उनकी पूरी क़ीमत वसूल हो गई थी।

परमेश्वर अपने प्रमाण-पत्र आसानी से नहीं देता। उसने अब्राहम को 50 सालों तक परखने के बाद ही उसे यह दिया था।

यीशु के मामले में, हमने देखा है कि पिता ने उसे नासरत में 30 साल तक परखने के बाद ही सबके सामने उसमें अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी।

पहली परीक्षाः

जब अब्राहम 75 वर्ष का था, तब परमेश्वर ने उसे उसका नगर और ऊर में उसके कुटुम्बियों को छोड़ कर, परमेश्वर में विश्वास का क़दम उठाते हुए, एक अनजाने रास्ते में चल देने के लिए बुलाया था। इस पहली परीक्षा में से अब्राहम सफलतापूर्वक गुज़र गया था। अपने पिता, माता, भाइयों, बहनों आदि से अलग हो जाना आसान नहीं होता। लेकिन जब तक हम इस नाड़ को नहीं काटते जो हमें उनसे जोड़े रखती है, तब तक हम कभी यीशु के शिष्य नहीं हो सकते!

यीशु ने कहा, "अगर कोई मेरे पास आए और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, तथा भाई-बहनों को, यहाँ तक कि अपने जीव को भी अप्रिय न जाने, वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा का तुरन्त पालन किया था।

मेरे मन में यह विचार आता रहा है कि अगर अब्राहम ने परमेश्वर की बुलाहट को अनसुना कर दिया होता तब क्या होता। यह निश्चित है कि परमेश्वर ने उसे मजबूर न किया होता। परमेश्वर ने उसकी जगह किसी दूसरे को चुन लिया होता; और फिर हमने अब्राहम का नाम दोबारा कभी न सुना होता। तब परमेश्वर की बुलाहट को सुनने वाला कोई दूसरा ही व्यक्ति विश्वास का पिता और मसीह का पूर्वज होता! अगर अब्राहम अपनी पहली परीक्षा में नाकाम हो जाता तो उसने कितना कुछ खो दिया होता। जब वह ऊर में से बाहर निकला, और उसने अपने सम्बंधियों की विनतियों को अनसुना कर दिया, तब वह नहीं जानता था कि परमेश्वर ने उसके लिए महिमा से भरे कैसे भविष्य की योजना बना रखी है।

परमेश्वर ने जैसे अब्राहम को बुलाया था, वैसे ही वह आज भी लोगों को बुलाता है। जिन लोगों को बुलाया जाता है, उन्हें इस बात की ज़्यादा समझ नहीं होती कि परमेश्वर की बुलाहट को सुन

लेने के साथ कितने बड़ी बातें दाँव पर लगी होती हैं। पिछली 20 शताब्दियों में, कलीसिया के इतिहास में ऐसे अनेक पुरुषों व स्त्रियों की अद्भुत कहानियाँ दर्ज हैं जिन्होंने अब्राहम की तरह परमेश्वर की बुलाहट का तुरन्त, आनन्दपूर्वक और पूरे हृदय से जवाब दिया था, और जिन्होंने परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा किया था।

लेकिन सिर्फ अनन्त ही यह प्रकट करेगा कि और वे कितने ऐसे लोग थे जिन्हें बुलाया गया था, लेकिन क्योंकि उन्होंने उस बुलाहट का कोई जवाब नहीं दिया था, इसलिए उन्होंने अपने जीवन बर्बाद कर दिए थे। वह धनवान युवा शासक बुलाए हुए उन बहुत से लोगों में से एक था जिसने यीशु की तरफ से पीठ मोड़ कर जाते समय अपने धन पर अपनी पकड़ को और मज़बूत कर लिया था, लेकिन जिसने परखे जाने पर एक ग़लत चुनाव किया था।

जिन्हें परमेश्वर बुलाता है, वे अक्सर यही पाते हैं कि उनके रास्ते में सबसे पहली और बड़ी रुकावट उनके मन-न-फिराए हुए और सांसारिक घरवालों की तरफ से ही आती है। इस वजह से ही यीशु ने शिष्य होने की पहली शर्त पूरी करने के लिए "पिता और माता से घृणा करने" के लिए कहा है।

अब्राहम इस परीक्षा में से सफलतापूर्वक गुज़र गया था - हालांकि उसने एक ही बार में यह नहीं किया था। ऊर से निकलते समय उसका पिता उसके साथ था, और उसने अब्राहम को हारान में रुक जाने के लिए राज़ी कर लिया था (जो कनान का आधा रास्ता था)। "तेरह अपने पुत्र अब्राम और अपने पौत्र लूत को जो हारान का पुत्र था, और अपनी पुत्र-वधु सारै को जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी, साथ लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कर कनान देश के लिए रवाना हो गया लेकिन वे हारान तक ही पहुँचकर वहीं रहने लगे" (उत्पत्ति 11:31)।

परमेश्वर ने, अपनी दया में, मृत्यु द्वारा अब्राहम के पिता को ले लिया कि फिर अब्राहम के रास्ते में कोई और बाधा न रहे। तब अब्राहम कनान की तरफ जा सका। हम अपने सम्बंधियों को यह अनुमति कभी न दें कि वे हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों में बाधा खड़ी करने वाले बन जाएं।

चार सौ साल बाद, लेवी के पुत्रों को भी अपने सम्बंधियों के खिलाफ़ इसी तरह खड़ा होना पड़ा था, जब इस्राएल की संतानों ने सोने के बछड़े की आराधना की थी। उस समय मूसा पहाड़ से नीचे उतरा था और उसने पुकारकर यह कहा था, फ्जो कोई परमेश्वर की ओर है, वह मेरे पास आए" (निर्गमन 32:26)। लेवी के पुत्र तुरन्त उसके पास आ गए थे। उन्हें यह आज्ञा दी गई कि वे छावनी में जाएं और मूर्ति की पूजा करने वाले सभी लोगों को तलवार से घात करें - और उन्हें अपने सम्बंधियों को भी नहीं छोड़ना था। लेवी के पुत्रें ने बिना झिझके यह किया।

बाद में मूसा ने उनके काम का बयान इस तरह किया था, "उसने (लेवी ने) तेरे (परमेश्वर के) वचन का पालन किया, और अनेक पापियों, बल्कि अपने बच्चों, भाइयों, पिताओं और माताओं को भी घात किया। (इसलिए) लेवी इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था सिखाएंगे" (व्य.वि. 33:9,10 - टी.एल.बी.)।

इस्राएलियों ने इस बात को नहीं समझा था कि उस दिन परमेश्वर उन्हें परख कर यह देख रहा था कि उनमें से उसके याजक कौन हो सकते हैं। इसमें लेवी योग्य पाए गए। और इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उसके याजक बनाया। यह पक्षपात नहीं था। परमेश्वर ने उस समय इस्राएल के सभी 12 गोत्रें को परखा था। लेकिन सिर्फ लेवी का गोत्र ही उस परीक्षा में सफल हुआ था।

दूसरी परीक्षाः

अब्राहम जब अपने सम्बंधियों से मुक्त हो गया, तब परमेश्वर भौतिक वस्तुओं के मामले में उसे परख सका। यह एक और ऐसी शर्त है जिसे शिष्य होने के लिए पूरा करना पड़ता है। यीशु ने कहा, "तुम से कोई मेरा तब तक चेला नहीं हो सकता जब तक वह अपनी सारी सम्पत्ति को न त्याग दे" (लूका 14:33)।

उत्पत्ति अध्याय 13 व 14 में, हम ऐसी दो घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं जिनमें अब्राहम धन के मामले में परखा गया था। पहली बार जब वह लूत से अलग हुआ था, क्योंकि उनके जानवरों के झुण्ड इतने बढ़ गए थे कि फिर वे एक-साथ नहीं रह सकते थे। उस समय, उम्र व रिश्ते में बड़ा होने और कनान में परमेश्वर द्वारा पहले बुलाया हुआ होने की वजह से, अब्राहम के लिए यह आसान और सही भी होता कि भूमि का चुनाव पहले वह करता। लेकिन एक वास्तविक निःस्वार्थ और उदार हृदय से, उसने लूत को पहले चुनाव करने के लिए कहा। और लूत ने वही चुना जो मानवीय दृष्टि में ज़्यादा बेहतर नज़र आ रहा था - सोदोम की भूमि।

लेकिन यह बात न तो अब्राहम को और न ही लूत को मालूम थी कि परमेश्वर ख़ामोशी से उनके बीच हुए इस लेन-देन को देख रहा था - वैसे ही जैसे वह हरेक आर्थिक लेन-देन को देखता है। अब्राहम की निःस्वार्थता से परमेश्वर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने तुरन्त ही उससे बात की और उससे कहा कि जहाँ तक अब्राहम की नज़र देख रही थी - चारों दिशाओं में, उस सारे देश को वह उसके वंशजों को दे देगा। इसमें लूत द्वारा चुनी गई भूमि भी शामिल थी। "लूत से अलग हो जाने के बाद परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'अब अपनी आँख उठा और जिस स्थान पर तू है वहाँ से उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चारों ओर दृष्टि डाल, क्योंकि जितनी भूमि तुझे

दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को सदा के लिए दूँगा" (उत्पत्ति 13:14,15)।

आज, लगभग 4,000 सालों के बाद, हम यह देखते हैं कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा कर दिया है। अब्राहम के वंशज (यहूदी) आज उस देश में रह रहे हैं जो परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था। लूत के वंशज (कुछ अरबी समुदाय) उस भूमि को खो चुके हैं जिस पर उनके पूर्वजों ने कब्ज़ा कर लिया था। ये परमेश्वर के तरीक़े हैं। जो मन के दीन हैं, वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

उत्पत्ति अध्याय 14 में, हम आर्थिक मामलों में अब्राहम को फिर से उस गरिमा में आचरण करता हुआ पाते हैं जो परमेश्वर के एक सच्चे सेवक को शोभा देता है। अब्राहम ने सोदोम के राजा के लोगों और उसकी सम्पत्ति को शत्रुओं के हाथों में से छुड़ाया था। इस उपकार के बदले में सोदोम के राजा ने अब्राहम को सारी धन-सम्पत्ति देनी चाही। लेकिन अब्राहम ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया।

अब्राहम ने सोदोम के राजा से कहा, "मैंने स्वर्ग और पृथ्वी के परमप्रधान परमेश्वर की शपथ ली है, कि जो कुछ तेरा है उसमें से मैं न तो एक डोरा, न जूती का बंध, न और कुछ लूँगा जिससे तू यह न कहने पाए, 'मैंने अब्राम को धनी बना दिया है'" (उत्पत्ति 14:22,23)। असल में, अब्राहम यह कह रहा था, "मेरा परमेश्वर क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है, इसलिए मुझे तुझसे कुछ भी लेने की ज़रूरत नहीं है।"

परमेश्वर ने फिर से ख़ामोशी के साथ उस बातचीत को सुना था। उसने तुरन्त ही प्रकट होकर अब्राहम से कहा कि वह स्वयं उसे प्रतिफल देगा। "इन बातों के बाद परमेश्वर का यह वचन दर्शन के

अब्राहम के पास पहुँचा, 'अब्राम, मत डर, मैं तेरी ढाल हूँ; तेरा प्रतिफल अति महान् होगा" (उत्पत्ति 15:1)।

अगर हम परमेश्वर का आदर करेंगे, तो परमेश्वर ज़रूर हमारा आदर करेगा।

आदम के बच्चे दूसरों की चीज़ों पर कब्ज़ा जमाने में बहुत माहिर हैं - अगर ज़बरदस्ती नहीं तो कम-से-कम तब तो ज़रूर जब वे चीजों उन्हें मुफ्त में दी जा रही हों। हमें यह अहसास नहीं होता कि हमारे आर्थिक लेन-देन में और आर्थिक मामलों की हमारी बातचीत में परमेश्वर हमें परख रहा होता है। उन मामलों में हमारे आचरण के अनुसार, परमेश्वर यह तय करता है कि उसके राज्य में, और पृथ्वी पर उसके बचे हुए लोगों की सेना में, हमारा क्या स्थान होगा।

तीसरी परीक्षाः

अब्राहम उसके पारिवारिक सम्बंधों और भौतिक धन-सम्पत्ति के मामले में परखा जा चुका था। अब वह उसके पुत्र के मामले में परखा जाना था। इससे पहले कि वह परमेश्वर की सराहना का प्रमाण-पत्र पाता, यह उसकी अंतिम परीक्षा थी।

जिस रात परमेश्वर ने अब्राहम से इसहाक को भेंट चढ़ाने के लिए कहा, तब अब्राहम 125 साल का हो चुका था, और लोगों के बीच परमेश्वर के जन के रूप में उसकी पहले ही एक छवि बन चुकी थी। उत्पत्ति 21:22 हमें बताता है कि "उन दिनों में (राजा) अबीमेलेक और उसके सेनापति पीकोल ने अब्राहम से कहा, 'तू जो कुछ करता है, उसमें परमेश्वर तेरे साथ है'।"

लेकिन हमारे बारे में दूसरों के अच्छे विचार परमेश्वर को बिलकुल प्रभावित नहीं करते। परमेश्वर स्वयं अब्राहम को परखना चाहता था। इसलिए उसने उस रात अब्राहम से धीरे से बात की; और

किसी व्यक्ति ने यह नहीं सुना कि परमेश्वर ने अब्राहम से क्या कहा था। उत्पत्ति 22:1 हमें बताता हैः "इन बातों के बाद (अर्थात् राजा अबीमेलेक द्वारा उसे परमेश्वर का जन होने का प्रमाण-पत्र देने के बाद) ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली और उससे कहा, 'अब्राहम।' उसने कहा, 'देख, मैं यहाँ हूँ।'"

उस रात परमेश्वर ने जो उससे माँगा, वह एक अनमोल चीज़ थी। अगले दिन अब्राहम उसके बारे में कुछ न करते हुए अपनी दिनचर्या में लगा रह सकता था, और कोई भी यह न जान पाता कि अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी थी। परमेश्वर इसी तरह यह परख रहा था कि अब्राहम उसका भय मानता था या नहीं।

और परमेश्वर हमें भी इसी तरह परखता है। वह गुप्त रूप में हमारे हृदय में बात करता है - यह बात ऐसी ख़ामोशी के साथ बोली जाती है कि हमारे साथ रहने वाले भी यह नहीं जान पाते कि परमेश्वर ने हमसे क्या कहा है। परमेश्वर द्वारा हमें एक बिलकुल निजी क्षेत्र (व्यक्तिगत जगह) - हमारा वैचारिक-जीवन - देने की एक वजह यह भी है कि वहाँ वह हमें परख कर यह देखता है कि हम उसका भय मानते हैं या नहीं।

अगर हमारे शब्दों की तरह हमारे विचार भी ज़ोर-शोर से सुनाई देते, तो हम सभी अपने विचारों को शुद्ध रखते, क्योंकि फिर हम यह नहीं चाहते कि कोई हमें नीची नज़र से देखें। लेकिन जब हमारे विचार ऐसे गुप्त होते हैं कि उन्हें सिर्फ परमेश्वर ही देख सकता है, तब यह जान लेना आसान होता है कि हम उसका भय मानते हैं या नहीं।

अगर हम ऐसे अशुद्ध और प्रेम-रहित विचारों को पालें जिन्हें हम अपने साथी-विश्वासियों से छिपा कर रखना चाहते हों, तो यह साफ तौर पर साबित करता देता है कि हम परमेश्वर का नहीं मनुष्यों

का भय मानते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ज़्यादातर विश्वासियों की यही दशा है। परमेश्वर ने उन्हें परखा है और वे उस परीक्षा में निष्फल हुए हैं।

एक गुप्त रूप में लैंगिक रूप में परखे जाने पर युसुफ जैसे कितने कम लोग होते हैं जो यह कहते हैं, फ्मैं ऐसी दुष्टता से भरा काम कैसे कर सकता हूँ? यह परमेश्वर के विरुद्ध पाप होगा" (उत्पत्ति 39:9 - टी.एल.बी.)।

ऐसे युवक ही परमेश्वर की सराहना का प्रमाण-पत्र पाते हैं।

आज ऐसे विश्वासी बहुत कम हैं जो लैंगिक शुद्धता के क्षेत्र में अपने वैचारिक-जीवन में पूरी तरह से विश्वासयोग्य हैं। लेकिन इन थोड़े से लोगों द्वारा ही परमेश्वर शैतान को यह दिखा सकता है कि पृथ्वी पर अभी भी उसके ऐसे पुत्र हैं जो अपनी दाहिनी आँख से पाप करने की बजाय उसे निकाल कर फेंक देना चाहेंगे, और जो अपने विचारों में कामुक लालसा करने की बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करेंगे। जीवन का मार्ग संकरा है और थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं। लेकिन अद्भुत बात यह है कि ऐसे थोड़े लोग हैं!

अब्राहम परीक्षा में सफल हुआ। उसने सिर्फ मनुष्यों के बीच में ही अपनी अच्छी साक्षी नहीं चाही थी; उसने गुप्त क्षेत्र में भी परमेश्वर का आज्ञा पालन करना चाहा था। इसलिए उसने अगली सुबह इसहाक को अपने साथ लिया और मोरिय्याह पहाड़ की दिशा में चल दिया, और वहाँ उसने अपने दिल के टुकड़े को यह कहते हुए परमेश्वर को भेंट चढ़ा दिया, "प्रभु, मैं इस पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति और किसी भी वस्तु से ज़्यादा तुझसे प्रेम करता हूँ।"

तब परमेश्वर ने अब्राहम को अपनी सराहना का प्रमाण-पत्र, दिया और उसे असीम आशिषों से आशिषित करने की प्रतिज्ञा की।

"प्रभु यूँ कहता है, 'क्योंकि तूने यह काम किया है कि अपने एकलौते को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं अपनी शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुझे निश्चय ही बड़ी आशिष दूँगा। मैं तेरे वंशजों को आकाश के तारागण और समुद्र-तट के रेत-कणों के समान असंख्य कर दूँगा, और तेरे वंशज अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार कर लेंगे। और तेरे वंशजों के कारण पृथ्वी की सारी जातियाँ आशिष पाएंगी क्योंकि तूने मेरी आज्ञा का पालन किया है'" (उत्पत्ति 22:16-18)।

एक बलिदानी आज्ञापालन से ज़्यादा परमेश्वर को दूसरी कोई बात प्रसन्न नहीं करती।

"हृदय में शुद्ध होना" एक निर्मल वैचारिक जीवन से बढ़कर होता है (मत्ती 5:8)। यह एक व्यक्ति के हृदय में परमेश्वर के अलावा और किसी बात का न होना होता है। ऐसे अनेक लोग होते हैं जो साफ-सुथरे और खरे जीवन जीते हैं, लेकिन फिर भी परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए व्यवसाय या सेवकाई के साथ उनका एक मूर्तिपूजक सम्बंध होता है। उन्होंने परमेश्वर-प्रदत्त इसहाक को वेदी पर रखकर वापिस परमेश्वर को लौटाना नहीं सीखा है।

क्या आप परमेश्वर और उसके साथ जुड़ा कोई दान-वरदान, या परमेश्वर और उसके साथ जुड़ा कोई सेवकाई, या परमेश्वर और उसके साथ जुड़े मनुष्यों के अच्छे विचार, या शायद परमेश्वर और उसके साथ जुड़ा स्वास्थ्य चाहते हैं? या फिर परमेश्वर और उसके साथ जुड़ा कोई इसहाक? या आपके लिए सिर्फ परमेश्वर ही काफी है?

जो इस परीक्षा में सफल नहीं होता, वह परमेश्वर की सराहना नहीं पा सकता। हम जब सिर्फ उस जगह पर पहुँच जाते हैं जहाँ हम ईमानदारी से प्रभु से यह कह सकते हों, "स्वर्ग में मेरा और कौन

है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता" (भजन. 73:25), तब तक, जहाँ तक परमेश्वर का सम्बंध है, हम योग्य नहीं पाए जाते।

यह वह मोरिय्याह पहाड़ है जो हममें से हरेक को चढ़ना पड़ता है, जहाँ हम अपना वह सब कुछ जो हमें सबसे ज़्यादा प्रिय है, परमेश्वर की वेदी पर चढ़ा देते हैं और सिर्फ परमेश्वर के साथ अकेले रह जाते हैं।

अगर हमारा वेतन बढ़ने से, या हमारी नौकरी में पदोन्नत होने से, या कोई उपहार पाने से हमारा आनन्द बढ़ जाता है, या हमारी अपेक्षित पदोन्नति न होने से या एक उपहार न मिलने से हमारा आनन्द घट जाता है, तो यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हमारा आनन्द परमेश्वर और उसके साथ जुड़ी किसी पार्थिव बात में पाया जाता है। तब यह ज़रूरी है कि हम अपने आनन्द को तब तक शुद्ध करें जब तक कि हम सिर्फ "प्रभु में आनन्दित" होना नहीं सीख लेते। अगर हमारा आनन्द सिर्फ प्रभु में पाया जाएगा, तो वह किसी पार्थिव बात के जुड़ने से न तो बढ़ेगा, और न ही किसी पार्थिव बात के खोने से घटेगा।

फिलिप्पियों 4:4 हमें यह आज्ञा देता है, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो।"

ज़्यादातर विश्वासियों के प्रभु में सदा आनन्दित न रह पाने की वजह यह है कि उनका आनन्द सिर्फ प्रभु में ही नहीं पाया जाता। वह प्रभु और उसके साथ जुड़ी किसी और बात में होता है।

जब हमारा हृदय शुद्ध होता है - जिसमें सिर्फ प्रभु के लिए ही जगह होती है - तब हमारा आनन्द भी शुद्ध होगा।

परमेश्वर ने अब्राहम की एक क़दम के बाद दूसरे क़दम में अगुवाई की थी, कि फिर वह पूरे समर्पण की जगह पर पहुँच सका था -

और अब परमेश्वर उसके द्वारा पृथ्वी की सारी जातियों को आशिष देने वाला था। अब्राहम जब मोरिय्याह पहाड़ से नीचे उतर रहा था, तब उसके जीवन में से आशिष की नदियों का बहना शुरू हो गया था।

परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि अब्राहम की आशिष हमारी भी आशिष हो।

गलातियों 3:14 कहता है, "यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशिष मसीह यीशु में गैर-यहूदियों तक पहुँचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी।"

परमेश्वर यह चाहता है जीवित जल की नदियाँ (पवित्र आत्मा की आशिष) अब हममें से हरेक के अन्दर से प्रवाहित हो।

लेकिन ऐसे कितने हैं कि जो क़ीमत चुकाने के लिए तैयार हैं?

और वे कितने हैं जो परमेश्वर द्वारा परखे जाने पर योग्य पाए जाते हैं?

अध्याय 6

मूसा का परखा जाना

मूसा एक और ऐसा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर से सराहना का प्रमाण-पत्र पाया था, जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था, "मेरा दास मूसा मेरे पूरे घराने में विश्वासयोग्य है" (गिनती 12:7)।

मूसा की मृत्यु के समय उसके बारे में यह दर्ज किया कि, "उस समय से मूसा जैसा इस्राएल में कोई नबी नहीं हुआ जिससे प्रभु आमने-सामने बातें करता था" (व्य.वि. 34:10)।

मानवीय बुद्धि का सिंहासन से हटाया जानाः

मूसा ने उसके जीवन के जो पहले 40 साल मिस्र के महलों में और सैन्य प्रशिक्षण केन्द्रों में बिताए थे, वह वहाँ एक आत्मिक अगुवा नहीं बना था। नहीं। परमेश्वर ने यह उसकी "ख़ुदी" की शक्ति को तोड़ने द्वारा किया था, जब मूसा ने अगले 40 साल जंगल में भेड़-बकरियों की देखभाल करते हुए बिताए थे।

80 साल की उम्र में, जब उसकी ख़ुद की योग्यताओं में उसका भरोसा चूर-चूर हो चुका था, तब मूसा परमेश्वर का सहारा लेने वाला और अपने लोगों को छुड़ाने वाला बन सका था।

जंगल में मिलाप वाले तम्बू के निर्माण के समय, निर्गमन अध्याय 39 व 40 में हम यह पाते हैं कि यह वाक्यांश 18 बार दोहराया गया है - "जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।" मिलाप वाले तम्बू का जो नमूना प्रभु ने दिया था, वह एक बहुत सहज और सामान्य नज़र आने वाली रचना थी। मूसा ने मिस्र में जिन

विस्मयकारी पिरामिडों की रचना होते देखी थी, यह उनकी तुलना में बिलकुल मामूली कृति थी।

अगर मूसा को 40 साल की उम्र में मिलाप वाले तम्बू को बनाने का काम दिया गया होता - जब उसकी "ख़ुदी" का ज़ोर उसकी बुलन्दी पर था - तो मूसा उसे ज़्यादा आकर्षक बनाने में ज़रूर उसमें कुछ बदलाव कर देता। लेकिन 80 साल की उम्र में, उसकी ख़ुदी इस तरह मर चुकी थी कि उसने बिलकुल वही किया जैसी परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी। लेकिन यही वह बात थी जो परमेश्वर की महिमा को मिलाप वाले तम्बू में ला सकी थी।

अगर हमें ईश्वरीय बुद्धि पानी हो तो यह ज़रूरी होता है कि हमारी मानवीय बुद्धि को उसके सिंहासन से उतार दिया जाए।

बाइबल कहती है, "अगर तुममें से कोई अपने आपको बुद्धिमान समझता है तो वह मूर्ख बने जिससे कि वह बुद्धिमान बन जाए" (1 कुरि. 3:18)।

परमेश्वर मूसा की सिर्फ तभी सराहना कर सका जब उसके अन्दर से मिस्र की बुद्धि के भूसे को झाड़ कर निकाल दिया गया।

प्रेरित पौलुस ने गमलीएल के चरणों में बैठकर 3 साल तक अध्ययन किया था जो यरूशलेम के बाइबल स्कूल का विख्यात् प्राध्यापक था। इस वजह से ही उसे अपने हृदय-परिवर्तन के बाद तीन साल अरब में बिताने पड़े कि उसके अन्दर से गमलीएल की बुद्धि निकाल कर ईश्वरीय बुद्धि आरोपित की जा सके। पौलुस ने इस समयकाल के बारे में गलातियों 1:17,18 में लिखा है, "पहले मैं अरब चला गया... फिर तीन साल बाद यरूशलेम गया।"

पौलुस सिर्फ तभी प्रभु का सेवक बन सका था।

जो भी प्रभु की सेवा करना चाहता है, उसके अन्दर से मानवीय चतुराई का हटाया जाना एक प्राथमिक ज़रूरत होती है। लेकिन ऐसे लोग थोड़े ही हैं जो इस पाठ को पूरी तरह सीख पाते हैं।

जब मूसा ने मिलाप वाला तम्बू बनाया तब परमेश्वर ने मूसा को परखा कि क्या वह उसे ठीक उस नमूने के अनुसार बनाता है या नहीं जो उसे पर्वत पर दिखाया गया था। प्रभु की महिमा का मिलाप वाले तम्बू पर उतर आना इस बात का एक प्रत्यक्ष चिन्ह् था कि वह मूसा के काम से संतुष्ट था।

जब हम प्रभु के लिए कुछ करते और बनाते हैं, तब हम क्या करते हैं? क्या हम ठीक उसी प्रकार बनाते हैं जैसा कि पवित्र शास्त्रों में दर्शाया गया है? या हमने इस संसार की बुद्धि के अनुसार उसमें कुछ बदलाव कर दिया है? अगर ऐसा है, तो यक़ीनन यही वह वजह होनी चाहिए कि परमेश्वर की महिमा हमारे जीवनों में नहीं पाई जाती।

अपने स्वार्थ की खोज में न रहनाः

परमेश्वर ने बाद में मूसा को एक और क्षेत्र में परखा। दो बार परमेश्वर ने यह देखने के लिए उसकी परीक्षा ली कि क्या वह इस्राएलियों का नुक़सान होते हुए देखकर भी स्वयं अपने लिए आदर पाना चाहेगा या नहीं। दोनों ही परीक्षाओं में मूसा एक श्रेष्ठ रूप में सफल हुआ।

पहली घटना उस समय की है जब इस्राएल की संतानों ने एक सोने का बछड़ा बनाने द्वारा परमेश्वर से विद्रोह किया था। परमेश्वर ने मूसा से कहा, “अब तू मेरे पास से अलग हट जा, जिससे मेरा

कोप उन पर भड़के और मैं उन्हें नाश करूँ और और तुझसे एक बड़ी जाति उत्पन्न करूँ" (उत्पत्ति 32:10)।

दूसरी घटना उस समय की है जब इस्राएलियों ने कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया था। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा था, "अब मैं उनको मरी से मारूँगा, और मिरास से वंचित कर दूँगा। और तुझसे एक ऐसी जाति उत्पन्न करूँगा जो उनसे बड़ी और सामर्थी होगी" (गिनती 14:12)।

दोनों ही अवसरों पर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस्राएलियों को मिटा कर मूसा और उसके वंशजों को एक बड़ी जाति बना देगा। उस समय मूसा के पास यह मौक़ा था कि वह अब्राहम और इस्राएल के 12 गोत्रो से की गई प्रतिज्ञाओं का वारिस बन जाए।

हल्के लोग इस परीक्षा में नाकाम हो जाते, लेकिन मूसा हल्का नहीं था। दोनों ही मौक़ों पर उसने परमेश्वर से इस्राएलियों को क्षमा करने की विनती की, बल्कि इस्राएल को बचाने के लिए वह मरने और नर्क में भी जाने के लिए तैयार हो गया था।

"तब मूसा ने परमेश्वर के पास लौटकर कहा, 'हाय, इन लोगों ने बड़ा पाप किया है; इन्होंने अपने लिए सोने का देवता बनाया है। पर अब तू इनका पाप क्षमा कर, और अगर नहीं तो तू अपनी पुस्तक से जिसे तूने लिखा है मेरा नाम मिटा दे!" (निर्ग. 32:31,32)।

वास्तव में, मूसा में स्वयं मसीह का आत्मा था, जो सूली पर पिता द्वारा त्यागे जाने के लिए तैयार था कि हम बच सकें। परमेश्वर मूसा की निःस्वार्थता से ऐसा प्रसन्न हुआ कि फिर उसने मूसा के साथ बहुत आत्मीयता के साथ बात करना शुरू कर दिया। "परमेश्वर मूसा से इस प्रकार बातें करता था जैसे कोई मनुष्य अपने मित्र से बातें करता है" (निर्ग. 33:11)।

परमेश्वर ने मूसा को उसकी महिमा देखने का अकथनीय विशेषाधिकार भी दिया। जब मूसा ने कहा, "मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे अपना तेज दिखा!", तब प्रभु ने कहा, "देख, मेरे समीप एक स्थान है, और तू उस चट्टान पर खड़ा हो, और जब तक मेरा तेज तेरे सामने से होकर चलता रहे, तब तक मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूँगा, और जब तक मैं तेरे सामने से होकर गुज़र न जाऊँ तब तक मैं अपने हाथ से तुझे ढाँपे रहूँगा, फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तू मेरी पीठ को देख सकेगा, लेकिन मेरा मुख न देख पाएगा" (निर्ग. 33:18-23)।

परमेश्वर के एक सेवक की सबसे बड़ी योग्यता यह होती है कि वह अपने स्वार्थ की खोज में नहीं रहता है। हम सभी के अन्दर स्वयं अपने लिए लाभ और सम्मान पाने की लालसा बहुत गहरी जड़ पकड़े हुए होती है, और परमेश्वर को यह एक मुश्किल काम करना होता है कि उसे हममें से उखाड़ कर अलग करे। वह हमारे हालातों को इस तरह तैयार करता है कि फिर हम अपने स्वार्थ की खोज में रहने वाली आत्मा को देख पाते हैं, कि फिर हम अपना न्याय स्वयं करने वाले और उससे अपने आपको शुद्ध करने वाले बन सकें। वह अपने वचन के द्वारा हमसे बात करता है, और (अगर हमारे सुनने वाले कान हों तो) अपने आत्मा के द्वारा हमसे लगातार बात करते हुए हमसे आग्रह करता रहता है कि हम अपने स्वार्थ की खोज में रहने वाली इस आत्मा से अपने आपको शुद्ध करें।

फिर भी, इन सब बातों के बावजूद ऐसे लोग कम ही हैं जो परमेश्वर की सराहना का प्रमाण-पत्र पाने की योग्यता पाते हैं। मूसा एक ऐसा व्यक्ति था। पौलुस और तीमुथियुस और ऐसे दो व्यक्ति थे।

ऐसे लोग ज़्यादा नहीं थोड़े ही होते हैं।

दूसरों के लिए मध्यस्थता करने वाली आत्मा, जैसी पुरानी वाचा में मूसा में भी पाई गई थी, इसकी बड़ी कमी की मुख्य तौर पर एक यही वजह रही है कि लगभग हरेक व्यक्ति, उसके हृदय की गहराई में किसी-न-किसी रूप में सिर्फ अपने ही स्वार्थ की खोज में रहता है। दूसरों के लिए गुप्त में प्रार्थना करने में हमें कोई आदर-सम्मान नहीं मिलता, और इस वजह से ही बहुत कम विश्वासी यह करते हैं।

हम यहीं परमेश्वर द्वारा परखे जाते हैं - क्योंकि परमेश्वर अपने आपको ऐसे किसी व्यक्ति के साथ वचनबद्ध नहीं करेगा जो अपने ही स्वार्थ की खोज में रहता हो।

आलोचना और विरोध के सामने प्रतिक्रियाः

एक और सुन्दर बात जो हम मूसा में देखते हैं, वह आलोचना और विरोध का सामना करते समय उसकी प्रतिक्रिया है। जब लोग विद्रोही होकर यह कहने लगे, फ्हम अपने लिए एक दूसरा अगुवा नियुक्त कर लेते हैं," तब मूसा सिर्फ (परमेश्वर के आगे) अपने मुँह के बल जा गिरा और ख़ामोश रहा। हम यह पढ़ते हैं, फ्तब मूसा और हारून इस्राएल की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिर पड़े" (गिनती 14:5)।

उसने अपनी सफाई देने से इनकार कर दिया:

जब कोरह और इस्राएल के 250 अन्य अगुवों ने मूसा की अगुवाई के खिलाफ़ विद्रोह किया था, तब भी हम यह पढ़ते हैं, "जब मूसा ने यह सुना, तो वह मुँह के बल गिर पड़ा" (गिनती 16:4)। वह

न तो स्वयं अपना बचाव करता था, न अपने पद को पकड़े रहता था, और न ही अपना अधिकार जताता था। जब उसके अपने भाई और बहन ने उसकी पीठ पीछे उसकी बुराई की और परमेश्वर ने इस बात के लिए उन्हें दण्ड देना शुरू किया, तब मूसा फिर से उसके मुँह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा था कि परमेश्वर उन पर दया करे।

“तब मूसा ने परमेश्वर की दुहाई दी, ‘हे परमेश्वर, कृपा करके उसे चंगा कर!” (गिनती 12:13)।

मूसा उसके जीवनकाल में वास्तव में बहुत नम्र व दीन व्यक्ति था। बाइबल यह बात इस तरह दर्ज करती है कि “मूसा पृथ्वी के सब निवासियों में सबसे नम्र व दीन व्यक्ति था” (गिनती 12:3)। परमेश्वर सिर्फ ऐसे लोगों के प्रति ही स्वयं को वचनबद्ध कर सकता है। दूसरों के ऊपर शक्ति और अधिकार की यह प्रवृत्ति होती है कि वह लोगों को भ्रष्ट कर देती है। संसार में एक कहावत है कि फ्शक्ति भ्रष्ट करती है, और पूरी शक्ति पूरी तरह भ्रष्ट करती है!”

लेकिन पूरी शक्ति ने मूसा को मामूली सा भी भ्रष्ट नहीं किया था। परमेश्वर ने उसके झुण्ड के विद्रोह द्वारा उसे बार-बार परखा था, लेकिन हर बार मूसा उस परीक्षा में से सफलतापूर्वक गुज़र गया था।

आत्मिक अगुवाई के साथ बड़े ख़तरे जुड़े होते हैं। लेकिन धन्य हैं वे लोग जो बार-बार अपने मुँह के बल धूल में गिरना और अपनी ज़बान को बंद रखना जानते हैं, और अपने आपको सही ठहराने और अपने अधिकार को बनाए रखने से बचे रहते हैं। परमेश्वर ने अपने सेवकों से यह प्रतिज्ञा की है कि वह स्वयं उन्हें सही ठहराएगा। उसने कहा है, “तेरी हानि के लिए बनाया गया कोई भी

हथियार सफल न होगा, और जितनी भी जीभें तुझ पर दोष लगाएं, तू उन्हें दोषी ठहराएगा। परमेश्वर के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे कारण निर्दोष ठहराए जाएंगे" (यशा. 54:17)।

इसलिए ऐसे मामलों को अपने हाथों में लेने की बजाय उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौंप देना ही सबसे अच्छा है। हमारा काम सिर्फ यही है कि जैसा यीशु ने किया था, वैसे ही हम भी अपना मामला उसके हाथों में सौंप दें जो धार्मिकता से न्याय करता है। "उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुःख सहते हुए धमकियाँ नहीं दीं, पर अपने आपको उसके हाथों में सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है" (1 पत. 2:23)।

यशायाह 53:7 में 3 बार यह दर्ज किया गया है कि यीशु उस समय चुप रहा जब उसे मारा गया, निर्वस्त्र किया गया, और वध करने के लिए ले जाया गया।

"वह सताया गया और उसे दुःख दिया गया, फिर भी उसने मुँह नहीं खोला। जैसे मेमना वध होने के समय और भेड़ ऊन कतरने के समय शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला।"

जो व्यक्ति ऐसे मौक़ों पर शान्त रहना नहीं जानता, वह कभी एक आत्मिक अगुवा बनने की अपेक्षा नहीं कर सकता। हम जिस विरोध का सामना करते हैं, वह ऐसा माध्यम होता है जिसके द्वारा परमेश्वर यह देखने के लिए हमारे विश्वास को परखता है कि हम एक परिस्थिति को संभालने के लिए उसमें भरोसा करते हैं या नहीं।

परमेश्वर के सेवक की ग़लतियाँः

बाइबल में परमेश्वर के जनों की आत्म-कथाएं हमें उत्साहित करती हैं, क्योंकि जैसा आधुनिक आत्म-कथाओं में नहीं होता, वे हमें इन मनुष्यों के कमज़ोर पक्ष भी दिखाती हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसने

अपने जीवन में कोई ग़लती न की हो, वह हमारे जैसे लोगों को उत्साहित नहीं कर सकता जो इतनी ज़्यादा ग़लतियाँ करते हैं। लेकिन बाइबल में परमेश्वर के जनों की ग़लतियाँ सिर्फ हमें उत्साहित करने के लिए ही नहीं बल्कि हमें चेतावनी देने के लिए भी दर्ज की गई हैं। अपने चुने हुए अभिषिक्त जनों से परमेश्वर जिस मानक स्तर पर बने रहने की माँग करता है, वह अन्य विश्वासियों के स्तर से बहुत ऊँचा होता है। जिन्हें ज़्यादा दिया गया है, उनसे ज़्यादा की माँग भी की जाएगी।

परमेश्वर ने अविश्वास से भरे इस्राएलियों पर कनान में प्रवेश करने के लिए प्रतिबंध लगाने से पहले उन्हें दस मौक़े दिए थे। उनके बारे में उसने कहा, "जितने लोगों ने दस बार मेरी परीक्षा की और फिर भी मेरी बात नहीं मानी, निश्चय ही वे लोग उस देश को कभी देखने न पाएंगे जिसकी शपथ मैंने उनके पूर्वजों से खाई थी" (गिनती 14:22,23)।

लेकिन उसने मूसा को सिर्फ एक ही मौक़ा दिया। और जब मूसा ने सिर्फ एक ही बार अविश्वास और आज्ञा-उल्लंघन किया - और वह भी एक बहुत मामूली रूप में - तब उसके प्रतिज्ञा-देश में प्रवेश करने पर परमेश्वर ने तुरन्त ही रोक लगा दी। वह घटना गिनती 20:7-12 में हमें चेतावनी देने के लिए दर्ज की गई है। "परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून के साथ मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते चट्टान से बातें कर कि वह अपना पानी दे। इस प्रकार तू चट्टान में से जल निकाल कर लोगों और उनके पशुओं को पीने के लिए दे, और परमेश्वर की आज्ञानुसार मूसा ने लाठी उठा ली। तब मूसा और हारून ने लोगों को उस चट्टान के सामने खड़ा करके लोगों से कहा, 'हे दंगा करने वालों, सुनो! क्या हम तुम्हारे लिए इस चट्टान में से पानी

निकालें?' तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और लाठी से दो बार चट्टान पर मारा, और उसमें से पानी फूट निकला, और लोगों और उनके पशुओं न पीया। लेकिन परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा, 'क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस प्रजा को उस देश में न पहुँचा पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया हैं'।"

इस बार परमेश्वर ने पानी प्राप्त करने के लिए मूसा से चट्टान से बात करने को कहा था। चट्टान को 40 साल पहले ही एक बार मारा जा चुका था, जैसा कि हम पहले निर्गमन 17:6 में पढ़ते हैं, "परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'देख, मैं तेरे सामने होरेब पर्वत पर खड़ा होऊँगा, और तू चट्टान पर मारना और उसमें से पानी निकलेगा जिससे कि लोग पीएं। और मूसा ने इस्राएल के पुरनियों के देखते वैसा ही किया।"

यह मसीह के एक बार, और सिर्फ एक ही बार क्रूसित होने का प्रतीकात्मक स्वरूप था। चट्टान को दूसरी बार मारने की कोई ज़रूरत नहीं थी। लेकिन मूसा क्रोध में था और उसने चट्टान को मारा (गिन. 20:10)। परमेश्वर के जन के आज्ञा न मानने के बावजूद, पानी फूट निकला। यह हक़ीक़त कि उसमें से पानी निकला, सिर्फ प्यासे लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को ही प्रमाणित करता है। इसमें परमेश्वर के जन के आज्ञा उल्लंघन के लिए कोई समर्थन नहीं था।

इससे यह बात समझी जा सकती है कि ऐसे पुरूषों व स्त्रियों की सेवकाई में भी क्यों आशिष होती है जो उनके व्यक्तिगत जीवनों में परमेश्वर के आज्ञाकारी नहीं होते।

लेकिन सिर्फ इस वजह से कि पानी फूट निकला, मूसा उसके आज्ञा उल्लंघन के परिणाम से न बच सका। परमेश्वर ने उसे कठोरता

से दण्ड दिया। और एक दिन वह उसके सभी आज्ञा न मानने वाले सेवकों को दण्ड देगा।

मूसा 40 सालों से कनान में प्रवेश करने के दिन का इंतज़ार कर रहा था। और अब, कनान की सीमा पर पहुँच कर, उसे उसमें प्रवेश करने के लिए अयोग्य ठहरा दिया गया। यह हो सकता है कि हम दूसरे लोगों को प्रचार करने के बाद, अपने जीवन के अंत के समय में भी ख़ुद अयोग्य पाए जाएं। पौलुस ने इस बात को समझ लिया था, इसलिए उसने कहा, "मैं अपनी देह को यंत्रणा देकर वश में रखता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि मैं औरों को प्रचार करके स्वयं अयोग्य ठहरूँ" (1 कुरि. 9:27)।

बाइबल कहती है, "उसने मूसा पर अपने मार्ग, और इस्राएलियों पर अपने कार्य प्रकट किए" (भजन. 103:7)।

इस्राएलियों ने सिर्फ परमेश्वर के बाहरी काम देखे थे, लेकिन मूसा को परमेश्वर के मार्गों (तरीक़ों) को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसलिए दूसरे इस्राएलियों की तुलना में मूसा से ज़्यादा की अपेक्षा थी। परमेश्वर के सेवकों को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, लेकिन उसी अनुपात में उनकी जवाबदारी भी ज़्यादा होती है।

मरीबा में मूसा को यह अहसास नहीं हुआ था कि परमेश्वर उसे परख रहा था। अगर उसे मालूम होता, तो वह ज़्यादा सचेत रहता। हमें भी यह अहसास नहीं होता कि परमेश्वर हमें भी परख रहा है, हमारे प्रतिदिन के जीवन की परिस्थितियों में, हमारे कामों और उद्देश्यों को तोल रहा है। चाहे लोग हमारी सेवकाई के द्वारा आशिष पा रहे हो, फिर भी हमें एक दिन मसीह के न्यायासन के सामने अपने व्यक्तिगत जीवनों का लेखा देना होगा।

मूसा के जीवन में पहले एक बार ऐसा हुआ था, कि परमेश्वर ने उसे यह संकेत दिया था कि जो अपेक्षा वह अपने सेवकों से करता है, उसमें वह बहुत कठोर है।

मूसा को इस्राएल का छुड़ाने वाला होने के लिए बुलाने के कुछ ही समय बाद, परमेश्वर ने उसके पुत्र का ख़तना न करने की वजह से उसके द्वारा किए गए आज्ञा उल्लंघन के लिए लगभग उसे मार ही डाला था। अपनी सहृदय पत्नी सिप्पोरा के आग्रह करने पर मूसा ने अपने पुत्र का ख़तना नहीं किया था। लेकिन परमेश्वर मूसा में किसी भी क़ीमत पर कोई आज्ञा-उल्लंघन नहीं सह सकता था।

यह घटना हमें चेतावनी देने के लिए निर्गमन 4:24-26 में दर्ज की गई हैः

"और ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में परमेश्वर ने उससे भेंट करके उसे मार डालना चाहा। तब सिप्पोरा ने एक तेज़ चकमक की छुरी लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पैरों पर यह कहकर फेंक दिया, 'निश्चय, तू मेरे लिए लहू का पति ठहरा।' तब परमेश्वर ने उसे (मूसा को) छोड़ दिया।"

उस समय मूसा हालांकि पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था, फिर भी इससे परमेश्वर को कोई फक़्र् नहीं पड़ने वाला था। अगर उसे कहीं आज्ञा का उल्लंघन नज़र आएगा, तो वह एक मूसा की भी जान ले लेगा। परमेश्वर कोई भेदभाव नहीं करता।

परमेश्वर ने हालांकि मूसा को इस्राएलियों को कनान में पहुँचाने के लिए अगुवाई करने के विशेषाधिकार से वंचित कर दिया था, फिर भी, क्योंकि मूसा उसके पूरे जीवन-भर परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक रहा था, इसलिए, जैसा कि हमें मत्ती 17:2,3 में बताया गया

है, परमेश्वर ने 1500 साल बाद, उसे कृपा-पूर्वक प्रतिज्ञा-देश में प्रवेश करने और रूपान्तर के पहाड़ पर यीशु के साथ खड़े रहने की अनुमति दी। उनके (पतरस, याकूब और यूहन्ना के) सामने उसका रूपान्तर हुआ... और देखो, उन्हें उसके साथ मूसा और एलिय्याह बातें करते हुए दिखाई दिए।

परमेश्वर धीरज से सहने वाला और संवेदना से भरा हुआ है, और वह ऐसा अन्यायी नहीं कि किसी की प्रेम-भरे बलिदानी सेवकाई को भुला दे। "क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और प्रेम को भूल जाए जो तुमने उसके नाम के प्रति इस प्रकार दिखाया हो कि पवित्र लोगों की सेवा की हो, और जो अब भी कर रहे हो" (इब्रा. 6:10)।

लेकिन परमेश्वर बहुत कठोर भी है। "परमेश्वर की दयालुता और कठोरता पर ध्यान दो" (रोमियों. 11:22)। अगर हमें परमेश्वर की ऐसी सेवा करनी है जो उसे स्वीकार्य हो, तो हमें ईश्वरीय भय में चलना होगा।

"इसलिए, जबकि हमें ऐसा राज्य मिलने पर है जो अटल है, तो आओ, हम कृतज्ञ होकर आदर और भय सहित परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो" (इब्रा. 12:28,29)।

तीमुथियुस की तरह, हमें भी परमेश्वर के ऐसे परिश्रमी कार्य करने वाले होना है, "जिसकी सराहना परमेश्वर द्वारा हो" (2 तीमु. 2:15)।

अध्याय 7

दाऊद का परखा जाना

परमेश्वर ने यह कहते हुए दाऊद की साक्षी दी, "मुझे एक मनुष्य मिल गया है जो मेरे मन के अनुसार है, और जो मेरी सारी इच्छाएं पूरी करेगा" (प्रेरितों. 13:22)।

इस्राएल के राजा के रूप में परमेश्वर ने पहले शाऊल को पसन्द किया था। लेकिन परमेश्वर ने जिन दो बातों में शाऊल को परखा, वह उन दोनों में ही निष्फल हुआ - पहले अधीरता की वजह से (1 शमू. 13) और फिर आज्ञा उल्लंघन की वजह से (1 शमू. 15)। इसलिए परमेश्वर ने राज्य को उससे लेकर दाऊद को दे दिया।

लेकिन राजा के रूप में अभिषेक हो जाने के बाद, दाऊद को इस्राएल के राज-सिंहासन पर बैठने से पहले एक लम्बे और मुश्किल रास्ते से गुज़रना पड़ा था। उन सालों में परमेश्वर ने दाऊद को अनेक प्रकार से परखा था, और दाऊद उन सभी परीक्षाओं में सफल हुआ था।

घर और काम की जगह में विश्वासयोग्यताः

दाऊद के बारे में हम सबसे पहली बात यह देखते हैं कि जब परमेश्वर ने उसे बुलाया, उस समय वह अपने घर में, और उसके चरवाहे के काम में, अपनी पार्थिव ज़िम्मेदारियाँ पूरी कर रहा था। "और शमूएल ने यिशै से कहा (जब वह परमेश्वर की आज्ञानुसार यिशै के एक पुत्र का राज्याभिषेक करने आया था), 'क्या सब बच्चे

ये ही हैं?' उसने कहा, 'सबसे छोटा (दाऊद) तो अभी रह गया है, और देख, वह तो भेड़ें चरा रहा है'" (1 शमू. 16:11)।

अगर परमेश्वर को हमारे जीवनों को सराहना है, तो घर और हमारे काम की जगह में हमारा विश्वासयोग्य होना ज़रूरी है।

हमने इस बारे में तब विचार किया था जब हमने यह देखा था कि यीशु ने परमेश्वर की सराहना कैसे पाई थी। हम उसे यहाँ दोहरा सकते हैं, क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है।

यीशु ने किसी निकम्मे व्यक्ति को वचन की सेवकाई में नहीं बुलाया था। सुसमाचारों में हम जिन प्रेरितों को सेवकाई के बुलाया हुआ पाते हैं, वे उनके काम की जगह में से बुलाए गए थे।

आज भारत में मसीही जगत का यह दुर्भाग्य है कि पूर्णकालिक सेवकाई करने वाले ज़्यादातर लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी कोई सांसारिक काम-धंधा नहीं किया है। यह सच्चाई ही एक ऐसी बात है जो यह सवाल खड़ा कर देती है कि क्या परमेश्वर ने उन्हें उसकी सेवा में बुलाया भी है या नहीं? हमारे पार्थिव जीवन के सामान्य कामों में हमारा विश्वासयोग्य रहना परमेश्वर की नज़र में बहुत महत्वपूर्ण है। यही बात हमें उसकी सेवा के योग्य बनाती है।

परमेश्वर के नाम के सम्मान में दिलचस्पीः

दाऊद के बारे में जो दूसरी बात हम देखते हैं वह परमेश्वर के नाम की महिमा में उसकी दिलचस्पी है। जब गोलियत इस्राएल की सेनाओं को ललकार रहा था, तो दाऊद ने उस भीमकाय पुरुष को इसलिए चुनौती नहीं दी थी क्योंकि वह कुछ रोमांचक काम करना चाहता था। उसने परमेश्वर के नाम के सम्मान में दिलचस्पी होने की वजह से ऐसा किया था।

हम यह पढ़ते हैं, “तब दाऊद ने उनके पास खड़े हुए पुरुषों से कहा, ‘जो पुरुष इस पलिश्ती मार गिराएगा और इस्राएल की निंदा को दूर करेगा, उसके लिए क्या किया जाएगा? यह ख़तना-रहित पलिश्ती होता कौन है कि यह जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?” (1 शमू. 17:26)।

परमेश्वर के हरेक सच्चे सेवक का सबसे पहला चिन्ह् यही होता है कि उसके सोच-विचार में उसकी दिलचस्पी सबसे पहले परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए होती है। प्रार्थना करते समय, “तेरा नाम पवित्र माना जाए,” उसकी पहली और सहज विनती होती है (मत्ती 6:9)।

बाक़ी सब कुछ - व्यक्तिगत सुख-सुविधा और सुरक्षा - गौण होता है। परमेश्वर अलग-अलग हालातों में हम सबको इस बात में परखता है। बहुत कम लोग इस परीक्षा में सफल हो पाते हैं। दाऊद उनमें से एक था।

परमेश्वर के नाम के सम्मान के लिए दाऊद में ऐसी तीव्र धुन थी कि उसके हृदय में एक ऐसा शक्तिशाली विश्वास पैदा हो गया कि गोलियत को हराने में परमेश्वर ज़रूर उसकी मदद करेगा। उस विश्वास ने उसका सारा भय दूर कर दिया। उस विश्वास से लैस होकर वह आगे बढ़ा और उसने उस भीमकाय पुरुष का वध करके इस्राएल के सारे शत्रुओं को भगा दिया।

अगर हममें भी परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए ऐसी ही धुन होगी जैसी दाऊद में थी, तो हम भी वह विश्वास पा सकेंगे जो हमारे हृदयों में से सारे भय दूर कर देगा, और जो सारे गोलियतों को मार गिराएगा। हममें क्योंकि अक्सर परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए दिलचस्पी की कमी होती है, इसलिए हम विश्वास में साहस से आगे बढ़ने की बजाय डर कर पीछे ही रहते हैं।

बदला लेने से इनकार करनाः

गोलियत को मार गिराने में दाऊद पूरी तरह नहीं परखा गया था। वह तो उसके परखे जाने की शुरूआत थी। दाऊद की लोकप्रियता ने शाऊल को ऐसी ईर्ष्या से भर दिया था कि वह दाऊद को मार डालने के लिए पूरे इस्राएल में उसका पीछा करता रहा था। दाऊद एक शहर से दूसरे शहर और एक गुफा से दूसरे गुफा में भागता फिर रहा था।

लेकिन ऐसे दो मौक़े आए जब शाऊल अकेला पड़ गया था, दाऊद की दया पर निर्भर था, और दाऊद उसे आसानी से मार सकता था। फिर भी दाऊद ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। वह परमेश्वर के अभिषिक्त राजा को, हालांकि वह विश्वास से भटक गया था, अंगुली भी लगाना नहीं चाहता था। असल में, दाऊद के मित्रें ने उसे ऐसा करने की सलाह भी दी थी। लेकिन दाऊद अपना सिंहासन शाऊल से छीन कर लेना नहीं चाहता था। उसका विश्वास था कि परमेश्वर अपने सही समय पर उसे सिंहासन पर बैठाने में पूरी तरह सक्षम था।

परमेश्वर की सर्वसत्ता में दाऊद का भरोसा उसके उस भरोसे से भी ज़्यादा अद्‌भुत बात है जो उसे परमेश्वर की उस योग्यता में था कि वह गोलियत को मारने में उसकी मदद करेगा। जब शाऊल दाऊद की हाथों में पड़कर उसकी दया पर निर्भर हो गया था, एक बार नहीं दो बार, तब परमेश्वर उसे परख रहा था। पहली घटना 1 शमूएल 24:3-7 में दर्ज हैः

“शाऊल भेड़शालाओं के समीप पहुँचा। वहाँ एक गुफा थी जिसमें शाऊल शौच के लिए गया। इसी गुफा के भीतर कोने में दाऊद और उसके साथी छिपे बैठे थे। दाऊद के साथियों ने उससे कहा, ‘सुन, आज ही वह दिन है जिसके बारे में परमेश्वर ने तुझसे कहा

था कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दूँगा जिससे तू उसके साथ अपनी इच्छानुसार कर सकेगा। तब दाऊद उठा और उसने शाऊल के बागे की छोर में से चुपके से कुछ काट लिया। उसके बाद दाऊद का विवेक उसे काटने लगा, क्योंकि उसने शाऊल के बागे की छोर काट ली थी। इसलिए उसने अपने साथियों से कहा, 'परमेश्वर के कारण यह मुझसे दूर हो कि मैं परमेश्वर के अभिषिक्त अर्थात् अपने स्वामी के साथ ऐसा करूँ कि उसके खिलाफ़ अपना हाथ बढ़ाऊँ। वह तो परमेश्वर का अभिषिक्त है।' इन वचनों से दाऊद ने अपने साथियों को समझाया और उन्हें शाऊल के विरुद्ध उठने न दिया। फिर शाऊल वहाँ से उठा और अपने मार्ग में चला गया।"

दूसरी घटना 1 शमूएल 26:6-12 में दर्ज हैः

"दाऊद और अबीशै रात को सैनिकों के पास गए, और देखो, शाऊल पड़ाव के बीच में सोया पड़ा था। उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा हुआ था। अब्नेर और उसके सैनिक उसके चारों ओर सोए हुए थे। तब अबीशै ने दाऊद से कहा, 'आज परमेश्वर ने तेरे शत्रु को तेरे हाथों में कर दिया है। इसलिए, मुझे भाला मारने दे कि मैं एक ही बार में उसे ऐसा मारूँ कि भाला उसे बेधकर भूमि में जा गड़े। और मुझे दूसरी बार उसे मारना न पड़े। लेकिन दाऊद ने अबीशै से कहा, 'उसे नाश मत कर, क्योंकि परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है?' फिर दाऊद ने कहा, 'परमेश्वर के जीवन की शपथ, परमेश्वर ही उसे मारेगा, या उसकी मृत्यु का दिन आ जाएगा, या वह युद्ध में मारा जाएगा। परमेश्वर न करे कि मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ चलाऊँ। लेकिन अब उसके सिरहाने गड़ा हुआ भाला और पानी की सुराही उठा ले, और हम चले जाएं। इसलिए दाऊद ने उसके सिरहाने गड़ा हुआ भाला और पानी की सुराही का उठा लिया और वहाँ से चले गए। लेकिन

उसे किसी ने न तो देखा, न जाना और न कोई जागा क्योंकि वे सब सोए हुए थे, क्योंकि परमेश्वर की तरफ से गहरी नींद उन पर आई हुई थी।"

हर बार दाऊद उसकी परीक्षा में सफल हुआ। उसने बदला लेने से इनकार किया, क्योंकि वह जानता था कि बदला लेना सिर्फ परमेश्वर का अधिकार है। उसने बुराई को भलाई से जीतने का फैसला किया था।

बाइबल कहती है, प्रियों, अपना बदला कभी न लेना, लेकिन परमेश्वर के कोप को जगह दो क्योंकि लिखा है, 'प्रभु कहता है कि बदला लेना मेरा काम है, बदला मैं लूँगा। लेकिन, 'अगर तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खाना खिला और अगर प्यासा हो तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।' बुराई से न हारो, लेकिन बुराई को भलाई से जीत लो" (रोमियों. 12:19-21)।

परमेश्वर की सर्वसत्ता में भरोसाः

परमेश्वर ने दाऊद को राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी। और दाऊद प्रतीक्षा करने के लिए तैयार था कि परमेश्वर ही उसे वह राज्य दे। जिस बात की परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा कर रखी हो, उसके लिए प्रतीक्षा करना वास्तव में हमारे विश्वास और धीरज की बड़ी परीक्षा होती है। प्रतीक्षा करने और परमेश्वर में भरोसा बनाए रखने से दाऊद का कोई नुक़सान नहीं हुआ था। परमेश्वर ने दाऊद के 30 साल पूरे होते ही उसे राजा बनाने की योजना बना रखी थी; और सारे हालात ठीक उसी तरह तैयार होते गए जैसा परमेश्वर ने तय किया था। "जब दाऊद राजा बना, तब वह 30 साल का था" (2 शमू. 5:4)।

निःसंदेह दाऊद ने युसुफ की जीवनी में से यह सीखा होगा कि परमेश्वर अपने ठहराए हुए समय पर एक व्यक्ति को सिंहासन पर बैठाने में सक्षम है। परमेश्वर के वचन ने युसुफ को भी बहुत साल पहले बड़े मुश्किल हालातों में परखा था। "लोगों ने उसके पैर में बेड़ियाँ डालकर उसे पीड़ित किया; वह लोहे के ज़ंजीरों में तब तक जकड़ा रहा, और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो गए, परमेश्वर का वचन उसे परखता रहा" (भजन. 105:18,19)।

लेकिन जैसे ही युसुफ ने उसके 30 साल पूरे किए, परमेश्वर का समय हो गया और युसुफ मिस्र का दूसरा शासक बन गया। "जब युसूफ मिस्र के राजा फिरॉन के सामने खड़ा हुआ तब वह तीस साल का था" (उत्पत्ति 41:46)। न तो उसके भाइयों की ईर्ष्या, न पोतीपर की पत्नी के झूठे आरोप युसुफ के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा होने से रोक सके। असल में, वे परमेश्वर की इच्छा के पूरा होने को एक दिन के लिए भी नहीं रोक सके।

दाऊद ने वह कहानी पढ़ी थी और अब वह स्वयं अपने जीवन के लिए भी परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और सर्वसत्ता को साबित करने के लिए कृत-संकल्प था। और उसने यह पाया कि परमेश्वर ने जो युसुफ के लिए किया था, वही उसने उसके लिए भी किया।

अब सवाल यह है कि क्या हममें यह विश्वास है कि जो कुछ परमेश्वर ने युसुफ, दाऊद और बहुत से दूसरे लोगों के लिए किया था, वही वह हमारे लिए भी करेगा? हमारा विश्वास यहीं परखा जाता है।

उदाहरण के तौर पर, क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने आपके लिए जिस वैवाहिक साथी की योजना बना रखी है वह आपके पास आ जाएगा, और इसके लिए आपको न तो किसी को दबोचने की या सांसारिक रीति से कुछ करने की ज़रूरत पड़ेगी?

और इसी तरह, जिस काम-धंधे और घर की परमेश्वर ने आपके लिए योजना बना रखी है - बल्कि पृथ्वी पर आपके जीवन के लिए ज़रूरी बाक़ी हरेक चीज़ के लिए - वह परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर आपके पास आ जाएगी?

जब हमारा सामना ऐसी ज़रूरतों से होता है, तब हमारा विश्वास परखा जाता है? "जो आशा रखकर मेरी राह तकेंगे, वे कभी निराश न होंगे" (यशा. 49:23)। "जब से जगत उत्पन्न हुआ है तब से न किसी ने सुना, और न आँखों ने तुझे छोड़ किसी ऐसे परमेश्वर को देखा है जो अपनी बाट जोहने वालों के लिए काम करता हो" (यशा. 64:4 - टी.एल.बी.)।

विश्वास करने वाले मनुष्यों को हमेशा सर्वश्रेष्ठ मिलता है - और उन्हें दबोचने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती।

यह बात याकूब के तरीक़े से कितनी अलग है जिसने पहलौठे का अधिकार पाने के लिए अपने पिता को धोखा दिया था! अगर याकूब ने सिर्फ परमेश्वर में भरोसा रखा होता और सारा मामला उसके हाथों में सौंप दिया होता, तो उसे बिना झूठ बोले पहलौठे का अधिकार मिल गया होता (उत्पत्ति अध्याय 27)। लेकिन क्योंकि याकूब ने उसे एक ग़लत तरीक़े से पाया था, इसलिए उसे अपना घर छोड़कर भागना पड़ा था और अगले 20 साल तक तकलीफें उठानी पड़ी थीं।

पवित्र शास्त्र में ये सभी बातें हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं, कि फिर हम कभी भी अविश्वास और अधीरता में काम न करें। किसी मुश्किल में से निकलने के लिए जब हम झूठ बोलने के प्रलोभन में पड़ें, तो हम परमेश्वर को आदर देते हुए, और यह भरोसा रखते हुए कि वह हमारी देखभाल करेगा, झूठ बोलने से इनकार कर सकते हैं। सच बोलने और परमेश्वर का आदर करने

से आपका कभी कोई नुक़सान नहीं हो सकता। अंततः, परमेश्वर हरेक झूठ से ज़्यादा शक्तिशाली है। और अगर एक झूठ आपको छुड़ा सकता है, तो परमेश्वर का छुटकारा और भी कितना महान् होगा!

"क्योंकि बढ़ती न तो पूर्व से, न पश्चिम से, और न मरुभूमि से आती है, लेकिन परमेश्वर ही न्यायी है, वही एक को घटाता है तो दूसरे को बढ़ाता है" (भजन. 75:6,7)।

सिर्फ परमेश्वर ही एक अज्ञात युसुफ और एक अज्ञात दाऊद को परखने और उन्हें विश्वासयोग्य पाने के बाद एक महत्वपूर्ण सेवकाई सौंप सकता है।

परीक्षाओं द्वारा भरपूरीः

बाद में, दाऊद ने अपने अनुभव का बयान करते हुए कहा, "क्योंकि हे परमेश्वर, तूने मुझे परखा है, तूने मुझे ऐसे ताया है जैसे चाँदी को ताया जाता है। तूने मुझे जाल में फँसाया, तूने मेरी कमर पर भारी बोझ रखा। तूने लोगों का मेरे ऊपर सवार होकर मेरे सिर पर चढ़ने दिया; मैं आग और जल में से होकर निकला। लेकिन इन सब बातों के द्वारा तू मुझे आज़ादी और उमड़ती-छलकती भरपूरी के स्थान में ले आया" (भजन. 66:10-12, विभिन्न अनुवाद)।

दाऊद का प्याला इस तरह से उमड़ने और छलकने वाला बना था। (भजन. 23:5 में दाऊद ने "उमड़ने-छलकने" के लिए जिस इब्रानी शब्द का इस्तेमाल किया है, भजन. 66:12 में उसने "भरपूरी की जगह" के लिए भी उसी शब्द का इस्तेमाल किया है)।

परमेश्वर का अंतिम उद्देश्य हमें उस महिमामय मुक्ति के स्थान पर लाना है जहाँ हममें से लगातार जीवित जल की नदियाँ बहती रहें। लेकिन वह पहले हमें परखे बिना वहाँ तक नहीं ला सकता। वह हमें आग और जलधाराओं में से ले जाएगा। वह पहले मनुष्यों

को हमारी निंदा और हम पर अन्याय करने देगा। वह हमें जाल में फँसने देगा - हमारे आने-जाने और हमारी सेवकाई पर रोकथाम लगा देगा। इन सभी परिस्थितियों में, वह हमारी प्रतिक्रिया पर नज़र रखेगा। अगर हम नम्रता और आनन्द के साथ वह सब कुछ स्वीकार कर लेंगे जो उसने हमारे जीवन के लिए तय किया है, तब अंततः वह निश्चय ही हमें उमड़ती-छलकती भरपूरी की जगह पर लाएगा।

ईमानदारी से पाप स्वीकार कर लेनाः

अंत में, हम दाऊद के चरित्र के एक और पक्ष पर विचार कर सकते हैं - जो कि राजा बनने के बाद भी, उसके द्वारा अपना न्याय स्वयं करते रहने के लिए तैयार रहना था। जब वह बतशेबा के मामले में पाप में गिर गया था, तब उसे तुरन्त ही अपने पाप की गंभीरता का अहसास नहीं हुआ था। बाद में, जब नातान नबी ने आकर उसके पाप के लिए उसे दोषी ठहराया, तब हम दाऊद को नम्र व दीन होकर उसके अपराध को स्वीकार करता हुआ पाते हैं।

"मैंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है" (2 शमू. 12:13)।

हमें अपनी तुलना दाऊद से करने की ज़रूरत नहीं है जो व्यभिचार के पाप में गिर गया था, क्योंकि वह पुरानी वाचा के अधीन था। वह कृपा के अधीन नहीं था। आज परमेश्वर हमसे जिस स्तर पर रहने की अपेक्षा करता है, वह उससे बहुत ऊँचा है। अब इस मामले में जो मानक स्तर यीशु ने हमारे लिए तय किया है, उसका बयान मत्ती 5:28-29 में किया गया हैः "मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री को कामुकता से देखे, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। अगर तेरी दाहिनी आँख तुझसे पाप करवाए, तो उसे निकालकर दूर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही अच्छा है कि तेरा

एक अंग नाश हो जाए बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर नर्क में डाला जाए।"

लेकिन हम दाऊद की प्रतिक्रिया से पाप के लिए दोषी ठहराए जाने के बारे में एक लाभदायक पाठ सीख सकते हैं।

ऐसा क्यों था कि परमेश्वर ने शाऊल से एक ऐसी बात की वजह से राज्य ले लिया जो, अगर मानवीय रीति से कहें, तो एक मामूली सी नज़र आने वाली बात थी? और परमेश्वर ने दाऊद को क्यों राजा बने रहने दिया जबकि उसका पाप - व्यभिचार के बाद हत्या - बहुत बड़ा पाप था? इसका जवाब उस प्रतिक्रिया में है जो उनके पाप से उनका सामना होने पर उन्होंने व्यक्त की थी। शाऊल ने एक निजी रूप में शमूएल के आगे अपने पाप को मान लिया था, लेकिन लोगों के सामने उसने फिर भी सम्मानित बने रहना चाहा था।

"तब उसने (शमूएल से) कहा, 'मैंने पाप किया है, लेकिन इस्राएल और प्रजा के प्राचीनों के सामने तू अभी मेरा आदर कर..." (1 शमू. 15:30)।

उसने पाप किया था, लेकिन वह फिर भी मनुष्यों का सम्मान पाना चाहता था। दूसरी तरफ, दाऊद ने अपने पाप को छुपाना न चाहा था, बल्कि उसने भजन 51 लिखने द्वारा सबके सामने अपने पाप को मान लिया था।

जो पाठ हम इन दोनों पुरुषों से सीखते हैं वह यह है कि जो मनुष्यों से आदर-सम्मान पाना चाहते हैं, उनके लिए एक असली टूटेपन और सच्चे मन-फिराव में परमेश्वर की तरफ फिरना, उन लोगों से भी ज़्यादा मुश्किल होता है जिन्होंने व्यभिचार और/या हत्या की होती है। यीशु ने सूली पर लटके हत्यारे और व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री दोनों को ही क्षमा कर दिया था, क्योंकि उन

दोनों ने ही पश्चाताप किया था (मन फिराया था)। लेकिन फरीसी, जो निरन्तर मनुष्यों का आदर पाना चाहते थे, उनके लिए मन फिराना मुश्किल था। इसलिए उन्हें क्षमा नहीं मिल सकती थी।

मनुष्यों का आदर पाना एक तरह की मूर्तिपूजा है। और यही वह क्षेत्र है जिसमें प्रभु हममें से हरेक को सबसे ज़्यादा परखता है।

दाऊद की तरह, धन्य हैं वे जो इसमें सफल होते हैं।

अगर हम नम्र व दीन होकर अपने बीते समय की नाकामियों को स्वीकार करने के लिए तैयार होंगे, तो यह कोई ज़रूरी नहीं है कि वे हमारे जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा होने से रोक देंगी - क्योंकि परमेश्वर दीनों को उसकी कृपा देता है।

अध्याय 8

एलीशा और गेहजी का परखा जाना

इस्राएल के इतिहास में एक निर्णायक समय में, परमेश्वर ने देश के सम्मुख उसका साक्षी होने के लिए एलिय्याह नबी को खड़ा किया था। एलिय्याह का एलीशा नामक एक सेवक था जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के लिए अगला नबी होने के लिए चुना था। और एलीशा का एक गेहजी नामक सेवक था।

एलीशा और गेहजी के बीच का अन्तर एक दिलचस्प अध्ययन का विषय है।

एलीशा की विश्वासयोग्यताः

परमेश्वर ने एलीशा को एलिय्याह से दोगुना ज़्यादा अभिषेक दिया था। यह एलीशा के जीवन पर परमेश्वर की सराहना की मोहर थी। लेकिन इससे पहले कि परमेश्वर ने उसे इस तरह अभिषिक्त किया, परमेश्वर ने उसे परखा था।

जैसा कि परमेश्वर के सभी सच्चे सेवकों के मामले में होता है, परमेश्वर ने एलीशा को भी तब उसकी सेवकाई में बुलाया था जब वह उसके सांसारिक काम-धंधे में व्यस्त था। "एलिय्याह को शापात का पुत्र एलीशा मिला जो अपने आगे बारह जोड़ी बैल लिए हुए हल जोत रहा था, और स्वयं बारहवीं के साथ था" (1 राजा 19:19)।

इसके बाद एलीशा ने एलिय्याह के लिए बहुत से छोटे और मामूली काम किए। उसकी पहचान एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बनी फ्जो एलिय्याह के हाथ धुलाया करता था" (2 राजा 3:11बी)।

वह अपने लिए बड़ी बातों की खोज में नहीं था, लेकिन इस युवक के लिए परमेश्वर के पास एक ज़बरदस्त योजना थी।

इससे पहले कि एलिय्याह स्वर्ग में उठाया गया, एलीशा को परखा जाना था। इसलिए एलिय्याह ने बेत-एल की तरफ बढ़ते हुए एलीशा से गिलगाल में रुक जाने के लिए कहा। लेकिन एलीशा ने वहाँ रुकने से इनकार कर दिया और एलिय्याह के साथ ही रहना चाहा। फिर बेत-एल में एलिय्याह ने एलीशा को यह कहते हुए पीछे छोड़ना चाहा कि वह यरीहो जा रहा है। लेकिन एलीशा एक जोंक की तरह उसे चिपका रहा। अंत में, यरीहो में भी एलीशा को इसी तरह परखा गया। लेकिन एलीशा दृढ़ता की इस परख में से भी सफलतापूर्वक गुज़र गया और यर्दन तक एलिय्याह के साथ-साथ चलता रहा। इस तरह उसने दोगुना अभिषेक पाया था - उसके जीवन के लिए परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ (2 राजा 2:1-14)।

इसमें हमारे लिए क्या संदेश है? हमारी आत्मिक उन्नति में ऐसे अनेक स्तर होते हैं जिनमें परमेश्वर हमें यह देखने के लिए परखता है कि क्या हम उससे संतुष्ट हैं जो हमें पहले ही मिल चुका है, या हम परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ पाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

गिलगाल उस जगह का प्रतीक है जहाँ हमारे पाप क्षमा होते हैं। फ्परमेश्वर ने यहोशू से कहा, 'आज मैंने मिस्र में हुए तुम्हारे अपमान को दूर कर दिया है। इसलिए उस स्थान का नाम आज तक गिलगाल पड़ा हुआ है" (यहोशू 5:8,9)।

अनेक मसीही बस इतनी ही दूर तक आते हैं और फिर रुक जाते हैं। लेकिन कुछ बेत-एल (अर्थात् 'परमेश्वर के घर') तक जाते हैं)

- जो परमेश्वर के परिवार में विश्वासियों के साथ संगति करना है। "उस स्थान का नाम उसने 'बेत-एल' रखा। तब याकूब ने कहा, 'वह पत्थर जिसे मैंने खड़ा किया है, परमेश्वर का धाम ठहरेगा" (उत्पत्ति 28:19,22)।

कुछ लोग बस यहीं ठहर जाते हैं। लेकिन कुछ लोग और आगे, यरीहो तक जाते हैं, जो परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य का प्रतीक है। फ्तब लोगों ने जय-जयकार किया और शहरपनाह नींव से गिर पड़ी... और लोग अपने-अपने सामने सीधे नगर पर चढ़ गए और उन्होंने नगर को ले लिया" (यहोशू 6:20)। ज़्यादातर मसीही उनके पूरे जीवन में ज़्यादा-से-ज़्यादा यहीं तक पहुँच पाएंगे।

ऐसे मसीही बहुत ही कम हैं जो यर्दन पार जाएंगे - जो मसीह की मृत्यु का प्रतीक है, जिसका स्वरूप बपतिस्मा है। फ्तब यीशु यर्दन पर यूहन्ना के पास पहुँचा, कि उससे बपतिस्मा ले" (मत्ती 3:13)। ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो सूली के मार्ग में चलना चाहते हैं - "उस नए और जीवित मार्ग में... जिसे उसने अपनी देह के द्वारा हमारे लिए खोल दिया है" (इब्रा. 10:19,20)। लेकिन पूरे हृदय से समर्पित यही वे लोग हैं जो पूरी तरह से अपनी ख़ुदी को ख़त्म करने के लिए आगे बढ़ते हैं, जो दोगुना अभिषेक पाते हैं - परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ। आज हम सभी परखे जा रहे हैं कि हम कौन से स्तर पर जाकर ठहरेंगे।

गेहजी का विश्वासघातः

जैसे एलीशा को एलिय्याह की नबूवत मिली थी, शायद उसी तरह गेहजी भी विश्वासयोग्य रहने पर अगला नबी हो सकता था। लेकिन इससे पहले गेहजी को परखना ज़रूरी था।

उसकी परख उस समय हुई जब सीरियाई सेनापति नामान कोढ़ से चंगा होने के बाद एलीशा के पास लौटकर आया था। अपनी

चंगाई की वजह से कृतज्ञता से भरे नामान ने एलीशा को लगभग 10 लाख रुपए का सोना व चाँदी और 10 जोड़ी सुन्दर सीरियाई पोशाकें भेंट में देनी चाही। एलीशा से नीचे के स्तर के किसी भी मनुष्य के लिए यह कितना बड़ा प्रलोभन होता! लेकिन एलीशा ने एक पल भी झिझके बिना उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। नामान एक अविश्वासी और बुराई से समझौता करने वाला व्यक्ति था, इसलिए एलीशा उससे कुछ नहीं ले सकता था।

नामान एक बुराई से समझौता करने वाला व्यक्ति था, यह एक स्पष्ट रूप में उस बात में देखा जा सकता है जो उसने चंगाई पाने के बाद एलीशा से कही। उसने कहा कि वह उसके आधिकारिक पद की वजह से मूर्तियों की आराधना करने के लिए मजबूर था। नामान जानता था कि मूर्तिपूजा ग़लत थी। लेकिन, आज के दूसरे बहुत से लोगों की तरह, वह भी सत्य के लिए अपने पद का त्याग करने के लिए तैयार नहीं था।

नामान ने एलीशा से कहा, "इस एक बात के लिए परमेश्वर मुझे तेरे दास को क्षमा करेः जब मेरा स्वामी रिम्मोन के भवन में पूजा करने जाए और मेरे हाथ का सहारा ले, और मुझे भी रिम्मोन के भवन में सिर झुकाना पड़े, तो परमेश्वर इस बात के लिए तेरे दास को क्षमा करे" (देखें 2 राजा 5:18)।

एलीशा ऐसे व्यक्ति से कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकता था। आरम्भिक प्रेरितों ने भी इसी उदाहरण का अनुसरण किया था। "वे उस नाम के लिए निकले और ग़ैर-यहूदियों से कुछ नहीं लेते" (3 यूह. 7)।

गेहजी ने नामान के धन के प्रति एलीशा के व्यवहार को देखा था। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे एलीशा ने नामान द्वारा प्रसन्नता से दी जा रही भेंट को इनकार करके एक मूर्खतापूर्ण काम किया था।

इसलिए वह नामान के पीछे भागा (वैसे ही जैसे अनेक भारतीय आज पश्चिमी मसीहियों के पीछे भागते हैं); उसने थोड़े से झूठ बोले और लगभग 40 हज़ार रुपए की चाँदी और दो जोड़ी सीरियाई पोशाकें लेकर लौट आया।

एलीशा ने सहजता से उसकी बेईमानी को देख लिया, और उसने फौरन ही गेहजी के लालच का पर्दाफाश कर दिया। उसने गेहजी से कहा कि क्योंकि उसने नामान का धन लिया था, इसलिए उसे नामान का कोढ़ भी दिया जाएगा। उसने उससे कहा, "इसलिए नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। तब वह हिम जैसा श्वेत अर्थात् कोढ़ी होकर एलीशा के सामने से चला गया" (2 राजा 5:27)।

एलीशा के अभिषेक का दोगुना मिलने की जगह, गेहजी को कोढ़ मिला।

उस दिन गेहजी को यह समझ नहीं आया था कि परमेश्वर उसे परख रहा था। अगर उसने यह जान लिया होता कि कितनी बड़ी बातें दाँव पर लगी हुई थीं, तो वह ज़्यादा सचेत रहा होता। लेकिन, जैसा कि हमने बार-बार देखा है, अक्सर हमें यह अहसास नहीं होता - और ख़ास तौर पर धन के मामले में तो बिलकुल भी नहीं - कि परमेश्वर हमें कब परख रहा है।

राजा हिजकिय्याह के बारे में एक बात लिखी है कि एक बार "परमेश्वर ने उसे इसलिए अकेला छोड़ दिया था कि उसके मन का सारा भेद जान ले" (2 इति. 32:31)। गेहजी के लिए भी यह बात सही थी। परमेश्वर ने उसे ऐसे हालात में पहुँचने दिया जहाँ उसे कोई नहीं देख रहा था। उसे सिर्फ इसी तरह परखा जा सकता था।

लालच का आख़िरी नतीजाः

बहुत साल पहले, यरीहो में आकान के साथ भी यही हुआ था। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि आकान एक ऐसे घर में अकेला हो जहाँ किसी की भी उस पर नज़र न हो कि फिर परमेश्वर यह देखे कि वह उन वस्तुओं में से कुछ लेता है या नहीं जिन्हें उसने वर्जित किया था। आकान निष्फल हुआ।

आकान ने अपनी निष्फलता का बयान इस तरह कियाः "मैंने देखा... मैं लोभ में पड़ गया... मैंने ले लिया" (यहोशू 7:21)। गेहजी के मामले में भी इसी क्रम के अनुसार हुआ था। और इस तरह, आकान और उसके परिवार ने कनान में अपनी विरासत को खो दिया; और गेहजी ने भी उस बुलाहट को खो दिया जो उसके लिए परमेश्वर के मन में थी। गेहजी और आकान दोनों ही एसाव के पदचिन्हों पर चले थे जिसने "एक समय के खाने के लिए अपना पहलौठेपन का अधिकार" बेच दिया था (इब्रा. 12:16)।

एलीशा और गेहजी के बीच का अन्तर बहुत विचारणीय है। एलीशा जबकि एलिय्याह के दोगुने अभिषेक के पीछे लगा था, गेहजी नामान के मामूली धन के पीछे गया था। ये दोनों ही दो तरह के मसीही सेवकों के प्रतीकात्मक स्वरूप हैं - और हममें से हरेक जानता है कि हम कौन सी श्रेणी में आते हैं!

गेहजी ज़रूर बिलाम की कहानी जानता होगा। फिर भी उसने कभी यह नहीं सोचा था कि उसका अंत भी बिलाम की तरह होगा। बिलाम एक ऐसा नबी था जिस पर एक समय में परमेश्वर के आत्मा का साया था। हम पढ़ते हैं फ्बिलाम ने दृष्टि की और इस्राएल को उसके गोत्रों के अनुसार पड़ाव डाले हुए देखा, और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा" (गिनती 24:2)।

वह इसलिए नहीं भटका था क्योंकि वह धन के मामले में बेईमान था, बल्कि इसलिए क्योंकि वह धन से प्रेम करता था। धन के प्रेम

और एक सांसारिक राजा का आदर पाने के प्रेम ने बिलाम को ऐसा अंधा कर दिया कि वह यह भी न देख सका था कि वह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जा रहा था। परमेश्वर ने यह देखने के लिए बिलाम को परखा था कि उसके हृदय के अन्दर क्या था। पहले जब बिलाम ने परमेश्वर की इच्छा जाननी चाही थी, कि वह राजा बालाक को मिलने के लिए उसके संदेशवाहक के साथ जाए या नहीं, तो परमेश्वर ने उसे स्पष्ट जवाब दिया थाः "तू इनके संग मत जा" (गिनती 22:12)। इससे स्पष्ट जवाब नहीं हो सकता था।

लेकिन जब बालाक ने और ज़्यादा धन और बड़ा सम्मान देने का प्रस्ताव रखा, तो बिलाम दोबारा परमेश्वर की अनुमति माँगने के लिए प्रलोभित हुआ। जब परमेश्वर ने देखा कि बिलाम वास्तव में जाना ही चाहता है, तो उसने उससे जाने के लिए कह दिया। लेकिन बिलाम को इसके परिणाम भुगतने पड़े।

कभी ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर की इच्छा न होने पर भी वह हमारे निवेदन स्वीकार कर ले, क्योंकि वह यह देखता है कि हममें उस बात की बड़ी लालसा है। लेकिन इसका आत्मिक परिणाम बिलकुल वैसा ही होगा जैसा भजन संहिता 106:15 में इस्राएलियों के बारे में लिखा हैः "उसने उनकी माँग को पूरा किया, लेकिन उनके जीव को सुखा दिया।"

बिलाम को यह समझ नहीं आया कि उसे परखा गया था, और यह कि उसके धन के प्रेम ने उसे भटका दिया था। वह नबूवत करता रहा था, लेकिन उसने सांसारिक लाभ की फिसलन भरी ढलान में अपना पहला क़दम बढ़ा दिया था, और अब उसकी गहराई तक पहुँचने में उसे सिर्फ कुछ ही समय लगना था। वह जिसकी एक समय परमेश्वर के साथ एक गहरी आत्मिक

सहभागिता थी, अंत में एक ओझा (जादूगर) बन गया, और इस्राएलियों द्वारा मार डाला गया। ऐसा लिखा है, "इस्राएलियों ने बोर के पुत्र बिलाम को, जो भावी बताता था, तलवार से मार डाला" (यहोशू 13:22)।

गेहजी ऐसी चेतावनी को स्वयं अपने लिए लेने में नाकाम रहा।

लेकिन हम आज उन विशाल मसीही जन-समूहों के बारे में क्या कहें जिन्हें बिलाम और गेहजी दोनों के उदाहरणों में चेतावनियाँ दी गई हैं, और जो फिर भी भटक गए हैं?

धन का प्रेम सारी बुराइयों की जड़ है। परमेश्वर उसके प्रति हमारी विश्वासयोग्यता और भक्ति को परखने के लिए भौतिक वस्तुओं को हमें आकर्षित करने देता है।

यीशु ने कभी नहीं चाहा था कि उसका कोई भी शिष्य भौतिक वस्तुओं के पीछे जाने द्वारा उन्हें प्राप्त करे। हमें पहले स्वर्ग का राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करने के लिए कहा गया है। तब हमारी जो भी भौतिक ज़रूरतें होंगी, वे समयानुसार अपने आप ही हमारी गोद में आ गिरेंगी।

परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा कि उसका कोई भी बच्चा अपनी ज़रूरत से ज़्यादा भौतिक वस्तुएं जमा करे। न ही वह यह चाहता है कि हममें से कोई धन के पीछे भागे। अगर हम परमेश्वर में भरोसा रखेंगे, तो जो भी हमारे लिए सबसे अच्छा होगा, वह हमें दे देगा - और तब धन हमें बर्बाद नहीं करेगा।

जब प्रभु हमें आशिष देगा, तब हमारी जो भी ज़रूरत होगी वह पूरी होगी, और उसके साथ कोई दुःख मिला हुआ नहीं होगा। "परमेश्वर की आशिष से ही धन मिलता है, और वह उसमें कोई दुःख नहीं मिलाता" (नीति. 10:22)। "मेरा परमेश्वर अपने उस धन

के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हरेक ज़रूरत को पूरा करेगा" (फिलि. 4:19)।

लेकिन जो धन हम उसके पीछे भागने से पाते हैं, वह अपने साथ बहुत से दुःखों को भी लेकर आता है। पौलुस ने इस ख़तरे के बारे में तीमुथियुस को चेतावनी देते हुए लिखा, "धन का लोभ सारी बुराइयों की जड़ है। कुछ लोगों ने इसकी लालसा में विश्वास से भटक कर अपने आपको अनेक दुःखों से छलनी बना डाला है" (1 तीमु. 6:10)।

हम परमेश्वर और धन (भौतिक वस्तुएं) दोनों की सेवा नहीं कर सकते। हम फ्या तो एक से घृणा और दूसरे से प्रेम करेंगे, या एक से मिले रहेंगे और दूसरे को तुच्छ जानेंगे" (देखें, लूका 16:13)।

जिसके सुनने के कान हों वह सुने।

अध्याय 9

पतरस और यहूदा का परखा जाना

जिन 12 शिष्यों को यीशु ने चुना था, और उनके व्यक्तित्वों में जो अन्तर था, वह शायद पतरस और यहूदा इस्करियोती में सबसे ज़्यादा था। पतरस सहज, अशिक्षित और सहृदय था। यहूदा इस्करियोती बुद्धिमान, चतुर और महत्वकांक्षी था।

धन के मामले में पतरस का मनोभावः

शिमौन पतरस के लिए परमेश्वर के पास एक बड़ी बुलाहट थी। लेकिन वह तब तक उसके पास नहीं पहुँच सकती थी जब तक कि उसे परख कर सराहने योग्य न पाया जाता। लेकिन जब यीशु ने उसे बुलाया था, उस समय पतरस परमेश्वर की अद्भुत योजना के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। परमेश्वर अपनी योजनाओं को हमारे सामने एक क़दम के बाद दूसरे क़दम पर ही खोलता है।

एक दिन यीशु ने पतरस की नाव में आकर उससे कहा कि वह नाव को गहरे पानी में ले ले और जाल डाले। पतरस ने ऐसा किया और उस दिन उसने इतनी मछलियाँ पकड़ीं, जितनी उसके जीवन में उसने एक ही बार कभी नहीं पकड़ी थीं (लूका 5:1-11)।

अगर पतरस आज के कुछ मसीही व्यापारियों की तरह होता, तो उसने प्रभु से यह कहा होता, "प्रभु, यह तो गज़ब हो गया। ऐसा करते हैं कि तू और मैं भागीदार बन जाते हैं। तू प्रचार करना और मैं तेरी आर्थिक मदद करूँगा। अगर मेरा मछली का धंधा इसी तरह चला, तो मैं सारे इस्राएल में सबसे धनवान व्यापारी बन जाऊँगा, और मेरे दसवांश की आर्थिक मदद से न सिर्फ तेरी

सेवकाई, बल्कि पूरे देश और विदेश में दूसरे मसीही सेवकों की भी सेवकाई चलती रहेगी!"

फिर पतरस सारे जगत में व्यापारियों के विभिन्न सम्मेलनों में घूम-घूमकर यह साक्षी देता और व्यापारियों को एक ऐसे मसीह के बारे में सिखाता जो उनके व्यापार को उन्नत कर सकता था।

सांसारिक मन की सोच-समझ ऐसी होती है।

लेकिन पतरस ने ऐसा नहीं किया। जब यीशु ने उससे कहा कि वह उसके जाल को छोड़ दे तो उसने अपने मछली पकड़ने के धंधे को तुरन्त छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिया। वह उसकी परीक्षा में सफल हुआ था।

मसीही लोगों को यह समझ नहीं आता कि जब परमेश्वर उनके कामों को उन्नत करता है कि वे ज़्यादा धन कमा सकें, तब वह उन्हें परख रहा होता है। ज़्यादातर मसीही इस परीक्षा में नाकाम हो जाते हैं। वे खोखले लखपति बनने से ही संतुष्ट हो जाते हैं जबकि वे शायद प्रेरित बन सकते थे।

सालों बाद, पतरस, जो एक धनवान व्यापारी बनने से बहुत दूर निकल चुका था, यह कह सका था, फ्मेरे पास चाँदी और सोना नहीं है" (प्रेरितों 3:6)। लेकिन उसके पास चाँदी और सोने से बढ़कर कुछ था। उसने मसीह के राज्य के लिए सांसारिक धन-सम्पत्ति के कूड़े को त्याग दिया था।

आज मसीही साहित्य की दुकानों में ऐसी पुस्तकें भरी रहती हैं जो मसीहियों को यह सिखाने का दावा करती हैं, कि वे उनके जीवनों में यीशु की साझेदारी में कैसे भौतिक रूप में सम्पन्न और धनवान हो सकते हैं! इन पुस्तकों में मसीहियों को उत्साहित करते हुए महँगी कारों, घरों और सम्पत्ति पर उनका दावा करने के लिए

उत्साहित किया जाता है - और यह सब मसीह में विश्वास से करने के लिए कहा जाता है।

एक बच्चा भी यह देख सकता है कि इन लेखकों के मन पृथ्वी की बातों में लगे हुए हैं, फिर भी अनेक विश्वासी धोखा खाते हैं। लोगों द्वारा भौतिक वस्तुओं की आशिष पाने की सारी साक्षियाँ सही हो सकती हैं - लेकिन ऐसे कितने हैं जो यह समझते हैं कि जब उन्हें धन प्राप्त हुआ तब परमेश्वर उन्हें परख कर यह देख रहा था कि क्या वे अपना धन बाँट कर "परमेश्वर की नज़र में धनवान" होना चाहते हैं या नहीं (लूका 12:21)। जहाँ पतरस सफल हुआ था, वहाँ वे असफल हो जाते हैं।

ख़ुदी आदम की हरेक संतान का केन्द्र है। जब हमारा हृदय-परिवर्तन होता है, तब हमारी ख़ुदी मरती नहीं है, लेकिन बड़े सूक्ष्म रूप में वह यह चाहती है कि परमेश्वर को भी अपनी स्वार्थी बातों को पूरा करने वाला बना ले। ऐसी सारी सांसारिक मसीहियत का यही मूल स्रोत् है जो आज-कल इन पुस्तकों में से "विश्वास" के वेश में आ रही है, और परमेश्वर से मुख्य तौर पर भौतिक और शारीरिक आशिषें ही पाने की बातें सिखाती है।

फिर भी, ये पुस्तकें एक काम करती हैं, कि ये इनके पाठकों के हृदयों की सच्ची अभिलाषा प्रकट कर देती हैं - कि वह स्वर्गीय है या पार्थिव है। इस तरह मसीही जगत में से गेहूँ और भूसा अलग हो जाता है!

ताड़ना के प्रति पतरस का मनोभावः

हम देखते हैं कि यीशु ने पतरस को उस समय कैसे एक और तरीक़े से परखा था जब उसने पतरस को सबके सामने ऐसी ताड़ना दी थी जैसी उसने कभी किसी मनुष्य को नहीं दी थी।

जब यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि उसे अस्वीकार किया जाएगा और सूली पर चढ़ाया जाएगा, तब पतरस, प्रभु के प्रति गहरे मानवीय प्रेम के वश में होकर, "उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगाः हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर कभी ऐसा न होने पाए!" (मत्ती 16:22)।

यीशु ने मुड़कर सबके सामने (दूसरे चेलों के सुनते हुए) पतरस से कहा, फ्हे शैतान, मुझ से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है" (मत्ती 16:23)। सबके सामने ताड़ना दिया जाना हमारे अहम् के लिए बहुत अपमानजनक होता है। और "शैतान" कहलाने से ज़्यादा बुरा तो और कुछ भी नहीं हो सकता! फिर भी पतरस ने कभी बुरा नहीं माना था।

जब यीशु द्वारा ख़ुदी को ख़त्म करने के संदेश से उसके अनेक शिष्यों ने ठोकर खाई और उसे छोड़कर चले गए, तब यीशु ने बारह शिष्यों से भी पूछा कि क्या वे भी जाना चाहेंगे, तब वह पतरस ही था जिसने यह कहते हुए जवाब दिया था, "प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं" (यूह. 6:68)।

पतरस ने ये शब्द यीशु के मुख से कठोर ताड़ना सुनने के कुछ ही समय बाद बोले थे। इस वजह से ही पतरस के शब्द ऐसे अद्भुत हैं। उसने यह जाना कि यीशु के मुख से निकले ताड़ना के शब्द भी सिर्फ अनन्त जीवन की ही बातें थीं!

हमारे एक बड़े भाई से ताड़ना के शब्द स्वीकार करने की हमारी योग्यता हमारी दीनता की परख होती है। इस परीक्षा में पतरस एक श्रेष्ठ रूप में सफल हुआ था।

धन के मामले में यहूदा का मनोभावः

यहूदा इस्करियोती भी उन 12 चेलों में से एक था जिन्हें यीशु ने चुना था, और उसके पास भी दूसरे चेलों जैसा ही अच्छा मौक़ा था कि वह भी ऐसा प्रमाण-पत्र पाता कि वह "परमेश्वर का सराहनीय" पुरुष बन जाता।

लेकिन बाक़ी सब की तरह, उसे भी परखना ज़रूरी था।

सुसमाचार के लेखे में दर्ज है कि "यहूदा इस्करियोती विश्वासघाती निकला" (लूका 6:16)। इसमें यह संकेत यह कि जब यीशु ने उसे चुना था, तब वह निष्ठावान् था। लेकिन उसकी स्वार्थी महत्वकांक्षा की वजह से वह बुरी तरह भटक गया था। बाइबल हमें चेतावनी देती है, "जहाँ स्वार्थी महत्वकांक्षा होती है, वहाँ बखेड़ा और हर तरह की बुराई होती है" (याकूब 3:16)।

यहूदा का जीवन हममें से हरेक के लिए एक चेतावनी है, क्योंकि अगर हम सचेत नहीं रहेंगे, तो हममें से कोई भी उसके जैसा बन सकता है। वह यीशु के दल का कोषाध्यक्ष था, और उसके पास धन के मामले में अपने आपको विश्वासयोग्य प्रमाणित करने के बहुत मौक़े थे। अगर वह विश्वासयोग्य रहा होता, तो वह नई वाचा की पत्रियों में से किसी एक पत्री का लेखक हो सकता था। और उसका नाम यक़ीनन नए यरूशलेम की नींव के एक पत्थर पर लिखा होता। बाइबल कहती है, "नगर की शहरपनाह की बारह आधार-शिलाएं थीं, जिन पर मेमने के 12 प्रेरितों के नाम लिखे थे" (प्रका. 21:17)।

लेकिन यहूदा इस्करियोती को जब परखा गया, तो वह निकम्मा ठहरा।

रुपयों की थैली में से ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों को भी दिया जाता था (जैसा कि हम यूहन्ना 13:29 में देख सकते हैं): "यहूदा के पास रुपयों की थैली रहती थी, इसलिए कुछ लोग यह अनुमान लगा रहे थे कि यीशु उससे कह रहा है... कि वह कंगालों को कुछ दे।" यहूदा ऐसा कहता तो था कि उसे इस काम में दिलचस्पी थी, लेकिन ग़रीबों के लिए रखे धन को भी वह चुरा लेता था। ऐसा लिखा है, "यहूदा इस्करियोती को कंगालों की कोई चिंता नहीं थी क्योंकि वह चोर था, और उसके पास रुपयों की थैली रहती थी, और जो कुछ उसमें डाला जाता था, वह उसे चुरा लिया करता था" यूह. 12:4-6)।

हम यह सवाल पूछ सकते हैं, "यीशु ने क्यों सबके सामने यहूदा का फौरन ही पर्दाफाश कर दिया था?"

इस सवाल का जवाब देने के लिए, हम एक और सवाल पूछ सकते हैं, "यीशु उन सबका पर्दाफाश क्यों नहीं करता जो आज मसीहियत के नाम में अपने लिए धन अर्जित कर रहे हैं?" आज भी ऐसे हज़ारों लोग हैं जो धन के लिए परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं, और जो धन उन्हें परमेश्वर के काम के लिए दिया जाता है, वे उसमें 100 प्रतिशत ईमानदार नहीं हैं। लेकिन प्रभु धीरज से सहता है। वह हरेक को परखे जाने के लिए समय देता है।

अगर यहूदा ने यह जाना होता कि धन को चुनने की वजह से वह क्या कुछ खो रहा है, तो उसका आचरण भी कितना अलग होता! और अगर आज के मसीही भी यह जानते कि धन को चुनने द्वारा वे क्या पाने से चूक रहे हैं, तो धन के मामले में उनका आचरण कितना अलग होता! यहूदा की समस्या यह थी कि वह लेने से तो प्रेम करता था, लेकिन देने से घृणा करता था।

यीशु ने अपने शिष्यों को देने में रखी आशिष के बारे में सिखाया था। "प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, 'लेने से देना धन्य है'" (प्रेरितों. 20:35)।

पतरस यह बात समझता था। लेकिन यहूदा को यह बात समझ नहीं आई थी। यहूदा यह समझता था कि ज़्यादा से ज़्यादा धन प्राप्त करने से ख़ुशी मिलती है।

सभी मसीही इन दो में से एक श्रेणी में आता हैः वे जो पतरस की तरह हैं, जो अपना सब कुछ त्याग देते हैं और जो परमेश्वर को और ज़रूरतमंद लोगों को देना पसन्द करते हैं; और वे जो यहूदा की तरह हैं, जो लेना और अपने लिए संग्रह करना पसन्द करते हैं। और ऐसे यहूदा अगर कभी देते भी हैं, तो उनका देना कंजूसी-भरा होता है जो सिर्फ उनके विवेक को शांत रखने के लिए ही होता है; और यह देना भी बड़ी झिझक के साथ होता है! लेकिन जब लेने का मौक़ा आता है, तब उन्हें कोई झिझक नहीं होती!

परमेश्वर लेने और देने के मामले में हमें यह देखने के लिए परखता है कि हम इस संसार के सिद्धान्तों के अनुसार अपने जीवन बिताना चाहते हैं या उसके राज्य के सिद्धान्तों के अनुसार।

अगर हमें परमेश्वर की सराहना पानी है, तो हमें अपने शरीर में पाए जाने वाले भेंट ग्रहण करने के प्रेम को निर्ममता से क्रूसित करना होगा। हमें अपनी पुरानी आदतों को छोड़कर नई बातों को अपनाना होगा। जिस तरह हम बीते समय में भेंट स्वीकार करने में बड़े कुशल रहे हैं, उसी तरह अब हमें देने में भी कुशल हो जाना चाहिए।

लेकिन हम रातों-रात किसी भी बात में कुशल नहीं हो जाते। सिर्फ लगातार अभ्यास ही हमें किसी बात में दक्ष बना सकता है। हमें देना शुरू करना चाहिए और फिर तब तक देने वाला बने रहना

चाहिए जब तक हमारा चरित्र वास्तव में न बदल जाए, कि फिर अंततः स्वयं परमेश्वर हमारे बारे में यह साक्षी दे सके कि हम लेने की बजाय देना ज़्यादा पसन्द करते हैं।

यीशु का सच्चा शिष्य वही है जिसने यह सीख लिया है कि परमेश्वर के लिए कैसे धनवान बना जाता है, और कैसे ज़रूरतमंदों को दिया जाता है।

तब उसकी अपनी ज़रूरत के समय में, वह यह पाएगा कि जिस नाप से उसने नापा था, परमेश्वर ने भी उसे उसी नाप से लौटाया है।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में पूरा-पूरा नाप, दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर, और उमड़ता हुआ डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा" (लूका 6:38)। यीशु ने यह सिखाया कि अगर हम अधर्म के धन के इस्तेमाल में ईमानदार नहीं पाए जाएंगे, तो हम परमेश्वर से कभी आत्मिक भरपूरी की आशा भी नहीं कर सकेंगे। उसने कहा, "अगर तुम अधर्म के धन में विश्वासयोग्य न रहे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?" (लूका 16:11)।

प्रभु ने यहूदा को रुपयों की थैली सौंपने के द्वारा उसे परखा, लेकिन वह बुरी तरह निष्फल हुआ। उसकी हानि अनन्त थी।

आज मैं और आप भी रुपयों की थैली में परखे जा रहे हैं।

ताड़ना द्वारा सुधारे जाने के प्रति यहूदा का मनोभावः

हमने देखा कि यीशु ने सबके सामने पतरस को डाँटकर उसकी प्रतिक्रिया में उसे परखा था। यहूदा भी इस क्षेत्र में परखा गया था। लेकिन पतरस की तरह वह सफल नहीं हुआ; वह निष्फल रहा था।

एक स्त्री ने जटामासी के इत्र से भरा एक पात्र यीशु के चरणों में लाकर उण्डेल दिया, क्योंकि जो प्रभु ने उसके लिए किया था, उससे वह बहुत कृतज्ञता से भरी हुई थी। वहाँ यहूदा ने अपना यह विचार व्यक्त किया कि वह धन की बर्बादी थी। लेकिन यीशु ने स्त्री का पक्ष लिया और कहा, "उसे रहने दो कि वह इसे मेरे गाड़े जाने के दिन तक याद रख सके। क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे पास सदा रहते हैं, लेकिन मैं तुम्हारे पास सदा नहीं रहूँगा" (यहून्ना 12:7,8)।

हम यह बिलकुल भी नहीं कह सकते कि यीशु ने यहाँ यहूदा को डाँटा था। असल में, जिस तरह यीशु ने पतरस को डाँटा था, उसकी तुलना में यह कुछ भी नहीं था!

फिर भी यहूदा बुरा मान गया था। मत्ती रचित सुसमाचार में जो इसका समान्तर लेख है, उसमें हम उस काम के बारे में पढ़ते हैं जो यहूदा ने इस घटना के फौरन बाद किया थाः "तब यहूदा मुख्य याजकों के पास गया, और उसने कहा, 'अगर मैं यीशु को तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?" (मत्ती 26:14,15)।

यहाँ "तब" शब्द महत्वपूर्ण है। जिस बात ने यहूदा को तुरन्त याजकों के पास जाने के लिए और यीशु के साथ विश्वासघात करने के लिए उकसाया था, उसकी वजह यह थी कि यीशु ने उसकी भूल को सुधारा था।

इसमें पतरस सफलता के साथ उसकी परीक्षा में से गुज़र गया था। लेकिन यहूदा बुरी तरह निष्फल हुआ था। आज आप और मैं भी तब परखे जाते हैं जब हमें उन लोगों द्वारा डाँटकर सुधारा जाता है जिन्हें परमेश्वर ने अधिकार देकर हमारे ऊपर नियुक्त किया है। जब माता-पिता ताड़ना के साथ बच्चों को सुधारते हैं, तब बच्चे परखे जाते हैं। जब पत्नियों को उनके पति ताड़ना देते हैं, तब वे परखी जाती हैं। जब अधिकारी डाँटते हैं, तब उनके अधीन किए

गए कर्मचारी परखे जाते हैं। और कलीसिया में, जब प्राचीन हमारी ग़लती के लिए हमें डाँटते हैं, तो हम सभी परखे जाते हैं।

हमारी ताड़ना के समय हमारी प्रतिक्रिया हमारी नम्रता व दीनता की सबसे स्पष्ट परीक्षा होती है। अगर हम बुरा मान जाते हैं, तो हम यहूदा इस्करियोती के साथी हैं।

अगर हम यह पाते हैं कि हमें सुधारने के लिए जब हमें डाँटा जाता है और हमें बुरा लगता है, तो हमें परमेश्वर को मदद के लिए पुकारने की ज़रूरत होती है जिससे कि हम अपनी ख़ुदी में मर सकें, कि फिर हम अपना अनन्त प्रतिफल न खो दें।

पतरस और यहूदा की प्रतिक्रियाओं में अनन्त मुद्दे दाँव पर लगे थे। उन दोनों को ही इस बात का अहसास नहीं था कि उन्हें परखा जा रहा था। हममें से ज़्यादातर लोग भी यह नहीं समझ पाते कि हमारी ताड़ना के समय परमेश्वर हमारी भी प्रतिक्रिया को देख रहा होता है।

अगर आप ताड़ना द्वारा सुधारे जाने के लिए तैयार नहीं हैं, या ताड़ना के समय आप बुरा मान जाते हैं, तो आप परमेश्वर की सराहना नहीं पा सकते।

अध्याय 10

परमेश्वर की सराहना पाए लोगों का झुण्ड

प्रकाशितवाक्य 14:1-5 में, हम शिष्यों के एक ऐसे छोटे झुण्ड के बारे में पढ़ते हैं जो पृथ्वी पर उनके पूरे जीवन-भर प्रभु के पीछे-पीछे चलते रहे थे। अंतिम दिन वे जय पाए हुए लोगों के समान खड़े हुए हैं - क्योंकि उनके जीवनों में परमेश्वर उसके सभी उद्देश्यों को पूरा कर सका था। जिनके पाप क्षमा हुए थे, वह तो इतनी बड़ी भीड़ थी कि जिसे कोई गिन नहीं सकता था, जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 7:9,10 में देखते हैंः

"इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, प्रत्येक जाति, समस्त कुल, लोग और भाषा में से लोगों की एक भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने और हाथों में खजूर की डालियाँ लिए सिंहासन और मेमने के सामने खड़ी थी। और लोग ऊँची आवाज़ से पुकार कर कह रहे थे, 'सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेमने से ही उद्धार है'।"

लेकिन प्रकाशितवाक्य 14 में शिष्यों के जिस झुण्ड का उल्लेख किया गया है, वह एक छोटी संख्या है जिसे गिना जा सकता है - 1,44,000- यह संख्या वास्तविक है या सांकेतिक (जैसा कि प्रकाशिवाक्य की अधिकांश पुस्तक है), यह बात महत्वपूर्ण नहीं है। इसमें समझने की बात यह है कि उस बड़ी भीड़ की तुलना में यह एक बहुत छोटी संख्या है।

उनके बारे में स्वयं परमेश्वर यह प्रमाणित करता है कि "उन्होंने अपने आपको भ्रष्ट नहीं किया... वे मेमने के पीछे जहाँ कहीं वह जाता था चलते थे... उनमें झूठ नहीं पाया गया... वे निर्दोष हैं" (पद 4,5)।

ये परमेश्वर का पहला फल हैं। ये मसीह की दुल्हन है। मेमने के विवाह के दिन, यह सबके सामने स्पष्ट हो जाएगा कि परमेश्वर के प्रति हरेक बात में सच्चा और विश्वासयोग्य रहना - छोटी और बड़ी हरेक बात में - अंत में पूरा प्रतिफल देता है।

उस दिन स्वर्ग में यह पुकार सुनाई देगी, "आओ, हम आनन्दित और हर्षित हों और उसकी स्तुति करें क्योंकि मेमने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है" (प्रका. 19:7)।

वे जो पृथ्वी पर अपने लाभ और मान-सम्मान की खोज में रहे थे, उस दिन उन्हें यह बात पूरी तरह समझ आ जाएगी कि उन्होंने कितनी बड़ी हानि उठाई है। वे जिन्होंने अपने पिता और माता, पत्नी या बच्चों, भाइयों या बहनों, या अपने जीव को भी प्रभु से बढ़कर जाना था, उस दिन वे अपने अनन्त नुक़सान को जान सकेंगे।

तब यह स्पष्ट हो जाएगा कि सबसे समझदार लोग वे ही थे जिन्होंने पूरी तरह से यीशु की आज्ञाओं का पालन किया था, और जिन्होंने उनके हृदय के पूरे समर्पण द्वारा वैसे ही चलना चाहा था जैसा वह चला था। तब मसीही जगत का खोखला मान-सम्मान स्पष्ट रूप में ऐसे कूड़े के रूप में नज़र आएगा, जो वह वास्तव में है। तब हम यह देख पाएंगे कि धन और भौतिक वस्तुएं सिर्फ ऐसे माध्यम थे जिनके द्वारा परमेश्वर ने हमें यह देखने के लिए परखा था कि हम मसीह की दुल्हन बनने योग्य हैं या नहीं।

काश, ऐसा हो कि हमारी आँखें उन सच्चाइयों को देखने के लिए अब भी खुल जाएं जो हम उस दिन साफ-साफ देखेंगे!

एक मनुष्य के लिए सबसे बड़े सम्मान की जो बात हो सकती है वह यही है कि उस दिन वह मसीह की दुल्हन में पाया जाए - ऐसा जिसे स्वयं परमेश्वर ने परखा है और उसकी सराहना की है! जिसके सुनने के कान हों, वह सुने। आमीन।